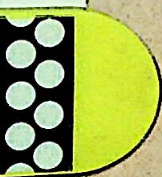
* ॐ *

महिला-मंगलाचार



संपादिका-संध्यादेवी. मूल्य ।)

महिला मंगलाचार आदि 4 पुस्तकें -1940



ओम्

महिला मंगलाचार।

प्रथम--भाग।



भजन, ईश्वर प्रार्थना नं० १

करिये स्वीकार, विनती नाथ! हमारी।
आनन्द सुधा बरसाओ, सबके दुख दूर भगाओ।
कहाओ हरि हितकार, विनती नाथ हमारी० ॥ १ ॥
गौरव के दिवस दिखाओ, व्रत-शील सुबोध बनाओ।
सिखाओ पर-उपकार, विनती नाथ हमारी० ॥ २ ॥
सत पथ पर हमें चलाओ, नित नीके कर्म कराओ।
सुधारो विविध प्रकार, विनती नाथ हमारी० ॥ ३ ॥
माया मद मोह छुड़ाओ, हम सबको अब अपनाओ।
लगाओ भवनिधि पार, विनती नाथ हमारी० ॥ ४ ॥

भजन नं० २

है अपरम्पार प्रभो! तुम्हारी महिमा,

अद्भुत है तुम्हारी माया, नहिं पार किसी ने पाया।
ऋषी मुनि सब गये हार॥ प्रभो०॥
भूमण्डल, सूरज, तारे, चर अचर बनाये सारे,
तुम्हीं ने हे करतार॥ प्रभो०॥
तुम हिरण्य—गर्भ कहलाते, सारे ब्रह्माण्ड रचाते,
कौन कर सके शुमार॥ प्रभो०॥
बने सकाम विश्व के कारण, करते हो सभी को धारण,
फिर करते हो संहार॥ प्रभो०॥
सब बलों के तुमही बल हो, सब चल हैं तुमहीं अचल हो,
तुमही सुख के भण्डार॥ प्रभो०॥
यह 'वासुदेव' गाता है जो शरण तेरी आता है,
मिले मुक्ती का द्वार॥ प्रभो०॥

भजन नं० ३

अजब हैरान हैं भगवन् तुम्हें क्योंकर रिझायें हम।
कोई वस्तु नहीं ऐसी जिसे सेवा में लायें हम॥ अजब०
करें किस तरह आवाहन कि तुम मौजूद हो हर जां।
निरादर है बुलाने को अगर घण्टा बजायें हम॥ अजब०
तुम्हीं हो मूर्तियों में भी, तुम्हीं व्यापक हो फूलों में।
भला भगवान पर भगवान् को; क्योंकर चढ़ायें हम॥ अजब०
लगाना भोग कुछ तुम को यह एक अपमान करना है।

खिलाता है जो सब संसार को; उसको खिलायें हम ॥अजब०
तुम्हारी ज्योति से रोशन हैं; सूरज, चन्द्र और तारे।
महा अन्धेर है तुमको अगर दीपक दिखायें हम ॥अजब०
भुजायें हैं न सीना है न गर्दन है न पेशानी।
तू है निर्लेप नारायण! कहां चन्दन लगायें हम ॥ अजब०

भजन नं० ४

दीजो प्रभु दान अपनी हमें भक्ती का।
हम आयीं शरण तुम्हारी, तुम रक्षा करो हमारी।
होय सब का कल्यान ॥ अपनी० ॥
मत करो नाथ अब देरी, हो नष्ट अविद्या मेरी।
मिटै सारा अज्ञान ॥ अपनी० ॥
भारत की दशा सुधारो, सबके दुःखों को टारो।
होय आनन्द महान ॥ अपनी० ॥
कहे वासुदेव कर जोरी; इक बिन्ती सुनियो मोरी।
न होने पावे हान ॥ अपनी० ॥

भजन नं० ५

ईश्वर तुम सर्वाधार हो, मेरी लीजो खबर जल्दी से ॥ टेक
सबके तुम्हीं सखा पितु माता, धर्म अर्थ कामादि प्रदाता।
शरण आपके जो भी आता, करो उसी को पार हो ॥१॥

तुमने रचे पदारथ सारे, पृथ्वी सूर्य्य चन्द्र नभ तारे।
आंखों से तुम नहीं निहारे, निराकार करतार हो ॥२॥
यदपि रहा धर्म से न्यारा, विषय भोग में समय गुज़ारा।
अबतो आपका लिया सहारा, तुमही परमोदार हो ॥३॥
भवसागर से मुझे बचाओ, नैया मेरी पार लगाओ।
वासुदेव पर अब ढुर जाओ, दीनों के आधार हो ॥४॥

भजन नं० ६

शरण पड़ी हूं मैं तेरी दयामय।
जगत सुखों में फंसकर स्वामी, तुझसे लिया चित फेरी
पाप ताप ने दग्ध किया मन, दुर्मति ने लिया घेरी
बही जाति हूं भवसागर में, पकड़ लेउ भुज मेरी
बहुत कुकर्म गिनो मत मेरे, क्षमा दृष्टि देउ फेरी
सत्य ज्ञान मधुर मुख अपना करो प्रकाश एक बेरी
पाप मलीन हृदय में मेरे; ज्योति प्रकाशो तेरी
प्रेम तरंग उठें मम अन्तर, दीन विनय सुनो मेरी।

भजन नं० ७

जिधर देखती हूं उधर तू ही तू है,
कि हर शय में जलवा तेरा हूबहू है।
मैं सुनती हूं हर वक्त तेरी कहानी,
कि तेरा ज़िकर हो रहा कूबकू है॥

चमन में सरो पर वह गाती है कुमरी,
तुही तू तुही तू, तुही एक तू है।
बिना उसके माबूद औरों को बोले,
ज़बाँ को संभालो यह क्या गुफ्तगू है।
हरएक गुलपै बुलबुल यह कहती है खालिस'
जिधर देखती हूं उधर तू ही तू है॥

भजन नं० ८

लीला तेरी लखी किसी से न जाय।
पारब्रह्म परमेश्वर स्वामी घट घट रह्यौ समाय।
रूप रेख से तू है न्यारा, जन्म मरण से किया किनारा।
आसमान पर उड्गन तारा, कैसे दिये रचाय॥ लीला०
तू दयाल हम दुखिया सारे, आन पड़े हम तेरे द्वारे।
खन्नादास जैसे बेचारे, लीजो शरण लिपटाय॥ लीला०

भजन नं० ९

टेक—हमें हरि दीजे विद्या दान।
तुम सर्वज्ञ सकल विद्या विद, हो प्रभु पुरुष महान।
देकर अखिल ज्ञान जगदीश्वर, मेट देहु अज्ञान॥ १॥
हिय संसार अतुल बलशाली; तुम सम और न आन।
देहु शक्ति सम्पूर्ण हमें प्रभु; करुणामय भगवान॥ २॥

दीनानाथ दीन दुःख भंजन, तुम हरि दया निधान।
हम भक्ता पावें प्रभु तेरी, लहैं मोक्ष निर्वान ॥ ३ ॥
पिता हमें मारग दिखलाओ, अति उत्तम सुख दान।
जासों सुमति पाय हम स्वामी, उपजावें सत ज्ञान ॥ ४ ॥
प्रीति प्यार संचार परस्पर; बनें चतुर सज्ञान।
ह्वै निष्काम धर्म रत होवें; लखि सुख दुखहि समान ॥५॥
"कृष्णाकला" की यही है विनती; सुनिये प्रभु धरि ध्यान।
इक क्षण नाथ तुमहिं नहीं भूलें; यह दीजे वरदान ॥६॥

भजन नं० १०

प्रभो ! दुखिनी की सुनहु पुकार ॥ टेक ॥

होहु कृपाल दीन दुखिया हित, हे जीवन आधार ! ।१॥
कृपापात्र अरु जीवन धन जो, रहीं तुम्हारी नाथ।
जेहि सुख दियो ईश तुम सब विधि; तेहि फिर करहु सनाथ ॥२
जब ते नाथ मोहि बिसरायो, भई तबहि तें हीन।
नाथ त्यागसों अति उदास हैं, भई दीन तन क्षीन ॥ ३ ॥
सहत रहत नित कुटिल जननि को प्रभु यह अत्याचार।
प्रान बचावो या दुखिया के ह्वै दयालु इह बार ॥ ४ ॥

भजन नं० ११

सारा जगत ऋणी है; करुणा-निधान तेरा।

सर्वस्व हम सबों का; है अवपदान तेरा ॥
हे दयालु जन्मदाता, हे कृपालु जगविधाता।
पृथ्वी है कीर्ति तेरा, यश आसमान तेरा ॥
आनन्द-रूप तेरा, कौशल अनूप तेरा।
फैला है सब जगत में, यश शक्तिमान् तेरा ॥
है अनन्त ! अन्त तेरा मिलता नहीं किसीको।
इक बूंद बुद्धि नर की सागर है ज्ञान तेरा ॥
कृत कृत्य होगया वह; जीवन का लाभ पाकर,
जो भूलकर खुदी को, करता है ध्यान तेरा ॥
शुभ नाम में तेरे क्या; अमृत भरा हुआ है।
मन शान्ति-लाभ पाता; करके बखान तेरा ॥
हर रोम रन्ध्र में जो; रसना लगी हो कृष्णा;
गाऊँ प्रभो ! मुदित हो, यश कीर्ति गान तेरा ॥

भजन नं० १२

भटक रही हैं दुखों में अब हम बचाओ स्वामिन् बचाओ स्वामिन्।
विनय यही है हमारी हरदम बचाओ स्वामिन्० ॥ १ ॥
विषय विकारों में फँसकर हमने भले बुरे का न ध्यान रक्खा।
शरन में आई तुम्हारी भगवन् बचाओ स्वामिन्० ॥ २ ॥
बनीं अनारी कहाती अबला न ज्ञान है कुछ न मान है कुछ।
धरम करम सब बिसार बैठीं बचाओ स्वामिन्० ॥ ३ ॥

कलह अविद्या की आग दिल में धधक २ कर जला रही है ।
सुबुद्धि जल की बहा के धारा बचाओ स्वामिन्० ॥ ४ ॥
गृहस्थ आश्रम किसे हैं कहते पती की पूजा का अर्थ क्या है ।
दया धरम का मरम न जानें बचाओ स्वामिन्० ॥ ५ ॥
नहीं पढ़ाते हमें हैं कोई न जाने इसका सबब भी क्या है ।
बनाते मूरख शरम न खाते बचाओ स्वामिन्० ॥ ६ ॥
हमीं थीं सीता हमीं थी लक्ष्मी हमीं को कहते थे लोग देवी ।
हमीं से उपजे थे वीर लाखों; बचाओ स्वामिन्० ॥ ७ ॥
हमारा आदर उठा है जब से तभी से भारत चमन है सूखा ।
तभी से कायर कपूत उपजे बचाओ स्वामिन्० ॥ ८ ॥
कभी ये भारत चमक रहा था; सितारा बनके हमारे बलसे ।
परन्तु अब ये उजड़ गया है बचाओ स्वामिन्० ॥ ९ ॥
तुम्हीं से आशा हमें है सारी; लगी हुई है नज़र तुम्हीं पर ।
तुम्हीं हो रहबर दिखाओ रस्ता बचाओ स्वामिन्० ॥१०

प्रभाती नं० १३

ओम अनेक बार बोल, प्रेम के प्रयोगी ॥ टेक ॥

है यही अनादि-नाद; निर्विकल्प-निर्विवाद;
भूलते न पूज्यपाद, वीतराग—योगी ।
ओम अनेक बार बोल प्रेम के प्रयोगी ॥
वेद को प्रमाण मान, अर्थ-योजना बखान;

गा रहे गुणी सुजान; साधु-स्वर्ग-भोगी।
ओम अनेक बार बोल प्रेम के प्रयोगी॥
ध्यान में धरें विरक्त; भाव से भजें सुभक्त,
त्यागते अधी-अशक्त; पोच—पाप-रोगी।
ओम अनेक बार बोल; प्रेम के प्रयोगी॥
शङ्करादि-नित्य-नाम; जो जपे विसार काम;
तो बने विवेक-धाम, मुक्ति क्यों न होगी?
ओम अनेक बार बोल; प्रेम के प्रयोगी॥

प्रभाती नं १४

जागिये कृपा निधान पंछी बन बोले।
चन्द्र किरण शीतल भई; चकई पिय मिलन गई।
त्रिविधि मंद चलत पवन; पल्लव द्रुम डोले॥
प्रात भानु प्रगट भयो, रजनी को तिमिर गयो।
भृङ्ग करत गुञ्ज गान, कमलन दल खोले॥
ब्रह्मादिक धरत ध्यान, सुर-नर मुनि करत गान।
जागन की बेर जान, नयन पलक खोले॥
तुलसिदास अति अनन्द, देख के मुखार बिन्द।
दीनन को देत दान भूषण बहु मोले॥

भजन नं० १५

बहिन तुम सबसे पहिले जागो ॥ टेक ॥
मुंह और हाथ धोय लो जल्दी, पति चरणन फिर लागो।
घर दरवाज़ा झाड़ो नित ही; विधि से बिस्तर टांगो ॥
चौका बर्त्तन करो कराओ; नहा मलिनता त्यागो।
सन्ध्या अग्निहोत्र आदि कर; गृह कार्य्यों में लागो ॥
भोजन रचने से तुम पहिले, सम्मति पति की मांगो।
नियत समय सब काम करोरी; अनरीतों से भागो ॥

भजन नं० १६

बहिन तुम मानो बात हमारी ॥ टेक ॥
करो सदा गुरु जन की सेवा; पढ़ लो विद्या प्यारी।
चित्र कला सीना और बुनना; सीखो विविध प्रकारी ॥
व्यञ्जन और शिशू पालन विधि; बाल चिकित्सा न्यारी।
काम काज व्यवहार सुहावन; पतिव्रत धर्म कथारी ॥
कहे "गुणाकर" यह सब बातें हैं तुमको सुखकारी ॥

भजन नं० १७

पतिव्रत धर्म सर्वोत्तम, धार लो इसको महिलाओ।
इसी का नित करो पालन, नहीं तुम और को ध्याओ ॥
नहीं मन्दिर में दर्शन को, नहीं शिवजी के पूजन को।

नहीं गङ्गा के न्हाने को, पति को छोड़ के जाओ ॥
पती निज ईश कर मानो, न जानो और सपने में।
न गण्डे मन्त्र लेने को, न गुण्डों पास तुम जाओ ॥
पति जीवित व्रतादिक यह, सभी निष्फल हैं ऐ बहनो।
मनू की है यही आज्ञा; कभी धोके में मत आओ ॥
अगर अन्धा तथा लंगड़ा, कुरूपा भी पती होवे।
उसी को ईश-वत मानो न ग्लानी चित्त में लाओ ॥
पढ़ो वृत्तान्त सीता का, पति के संग वन जाना।
अधोगति क्या तुम्हारी है, तनिक मन में तो शर्माओ ॥
हरा सीता को जब रावण, धरा जा लङ्क के माँहीं।
पतिव्रत धर्म नहीं छोड़ा; इसी का फेर फल पायो ॥
हुई गान्धारि सी नारी; वीर विदुषी वो थी भारी।
पति निज प्राण कर माना, उन्हीं के मान तुम गाओ ॥
पढ़ो सत्शास्त्र हितकारी; कभी मत गाओ तुम गारी।
सुधारो दीन भारत को, कुरीती त्यागती जाओ ॥
अगर अब भी न चेतोगी, तो निष्फल है हमारा श्रम।
इसी 'शर्म्मा' की विनती को; श्रवण तक नेक पहुंचाओ ॥

भजन नं० १८

बहिनो! चाल सुधारो अपनी बहिनो चाल सुधारोरी ॥ टेक
बाणी सबसे मीठी बोलो; प्रेम का बीज उगाओरी।

सासु ससुर और पति देवर से; हिल मिल समय बिताओरी ॥
नाम धरति हैं सभी स्त्रियां; तुमने क्यों हाल बिगारोरी ।
सीठने गाली बकना छोड़ो; मंगलचार उचारोरी ॥
व्याह शादी में अच्छे अच्छे; गीत बहिन तुम गाओरी ।
महिला मंगलाचार सुनाओ; घर घर इसे प्रचारोरी ॥
झूठे दई देवता छोड़ो; पूजो न इन्हें पुजाओरी ।
सन्ध्या हवन पञ्च यज्ञों को; बिधि से करो कराओरी ॥
गंगा जमुना तीरथ-मेला; जाकर दुख नहिं पाओरी ।
निज पति को सेवा-सुख पहुँचा, जीवन शुद्ध बनाओरी ॥
धर्म कर्म की रीति प्रचारो; घर में सुख फैलाओरी ।
हिम्मत ना अब हारो बहिनो; अपनी दशा सुधारोरी ॥
आप पढ़ो पुत्री को पढ़ाओ, धर्म का कार्य बिचारोरी ।
पुत्रियों को शुभ शिक्षा देकर, निज सन्तान सुधारोरी ॥

भजन नं० १९

पति को पूज लो री; है वह असली देव तुम्हारा ॥टेक॥
बाल अवस्था मात पिता ने; पालन किया तुम्हारा ।
तरुण अवस्था में पति मालिक; असली देव तुम्हारा ॥ १
पाणिग्रहण करा जब तुमने; कीनी क्या प्रतिज्ञा ।
उसी नियम पर चलना चाहिये मानो पति की आज्ञा ॥ २
सबसे बड़ा देव पति जानो इससे बड़ा न कोई ।

उत्तम से उत्तम फल इसका धर्म पतिव्रत सोई ॥ ३
धर्म पतिव्रत को तुम अपने कभी न छोड़ो प्यारी।
सत्य धर्म पर चलो हमेशा पति की आज्ञाकारी ॥ ४
असली धर्म भजन के द्वारा दिया तुम्हें समझाई।
धर्म अर्थ के कारण करते "रामचन्द्र" कविताई ॥ ५

भजन नं० २०

पति अपने में राखो ध्यान बढ़ कर धर्म नही ॥
तन भी दीजे मन भी दीजे अर्पण कीजे प्राण ॥
जो पति की आज्ञा शिर धारो।
सुन्दर हो सन्तान ॥ बढ़कर० ॥
ऋषि मुनि गावें वेद बतावें।
सुख होवे परिणाम ॥ बढ़कर० ॥
सम्पत्ति पाओ दुख बिसराओ।
पाओ पद निर्वाण ॥ बढ़कर० ॥
सन्ध्या करलो ओम् सुमरलो।
होम करो नित दान ॥ बढ़कर० ॥

भजन नं० २१

पति बिन सूनो सभी संसार ॥ पति ॥
पति ही प्राण पती जग जीवन पति ही है भरतार ॥ पति०
पति ही से पति है निज तन की पतिपन राखनहार ॥ पति०

जब तक पति है तब तक पति है बिन पति विपति हजार ॥ पति०
पति ही तप है पति ही व्रत है पति ही है करतार ॥ पति०
जाको प्रेम चरण पति लागो धन्य २ वही नार ॥ पति०
एक पतिव्रत रहे सर्वदा और व्रत निस्सार ॥ पति०
बिन पति व्रत राखे स्त्री का जीवन है धिक्कार ॥ पति०

भजन नं० १२

करो सखि निज भाषा पर प्यार ॥
अपनी भाषा बोलें सारे देशों के नर नार ।
अरब रूस जापान जर्मनी चीन शाम तातार ॥
करो सखि निज भाषा पर प्यार ॥ १
हिन्दू लोगन हिन्दी भाषा दीनी हाय बिसार ।
पंजाबी बंगाली तिलगू तामिल रहे पुकार ॥
करो सखि निज भाषा पर प्यार ॥ २
सोलह स्वर अरु छत्तिस व्यञ्जन इसके सखी मंझार ।
अरबी अट्ठाइस फ़ारसी में हैं बीस और फिर चार ॥
करो सखि निज भाषा पर प्यार ॥ ३
यूरप वाले छब्बीस लैटर प्यारी रहे उचार ।
इससे अधिक अक्षरों को वे माँगत फिरें उधार ॥
करो सखि निज भाषा पर प्यार ॥ ४
भाषा धर्म देश यह भारत सबसे परम उदार ।
स्वधर्म निज भाषा अपनाओ राम करें उद्धार ॥ करो

भजन नं० २३

अँगरेज़ीदाँ बहू सास से दिन भर लड़ती है॥
घर का काम नहीं कुछ करती;
पांव नहीं धरती पर धरती।
सास ननद से बात बात पर खूब अकड़ती है॥
अंगरेज़ीदां बहू सास से दिन भर लड़ती है॥ १
पलके पर बैठी इतराती;
करते हुक्म नहीं शरमाती।
पान तेल सिगरेट साबुन पर रोज़ झगड़ती है॥
अंगरेज़ीदां बहू सास से दिन भर लड़ती है॥ २
कभी सास जो क्रोध जताती,
बहू और दूना सतराती,
कड़क कड़क कर कुशित सास के केश पकड़ती है॥
अंगरेज़ीदाँ बहू सास से दिन भर लड़ती है॥ ३
कभी सास जो काम बतावे;
नो* कहकर नहिं हाथ लगावे;
गिटपिट गिटपिट करके उसके पीछे पड़ती है॥
अंगरेज़ीदाँ बहू सास से दिन भर लड़ती है॥ ४
जो कुछ 'राम' चीज़ मंगवावे,
मिले न जब तक अश्रु बहावे।
मंगवा कर छोड़े जो अपनी अड़ पर अड़ती है॥
अंगरेज़ीदां बहू सास से दिन भर लड़ती है॥ ५

* नहीं

भजन नं २४

अंगरेजीख्वां बहू खसम पर हुक्म चलाती है॥
कहती पेटी कोट बनादो.
सुन्दर साया जल्दी लादो;
नहीं तुम्हारी धोती चादर मुझको भाती है॥
अंगरेजीख्वां बहू ख़सम पर हुक्म चलाती है॥ १
सोप फैन्सी पहले लाओ;
पीछे खाना दाना खाओ;
राख खाक से धोय देह मेरी फट जाती है॥
अंगरेज़ीख्वां बहू ख़सम पर हुक्म चलाती है॥ २
रोटी को कुक* जल्द लगालो;
या होटल से खाना खालो.
मुझे बनानी दाल चपाती कुछ नहिं आती है॥
अंगरेजीख्वाँ बहू खसम पर हुक्म चलाती है॥ ३
सक्का रखलो ख्वाह कहारी,
मुझे न आती खिदमतगारी;
मदर† मेरी क्या मुझसे घर का काम कराती है।
अंगरेजीख्वां बहू ख़सम पर हुक्म चलाती है॥ ४
पढ़ने में कोशिश करती थी;

*रसोइया † माता

खेल खेलती या फिरती थी;
करूं राम क्या काम तबीअत तो घबराती है।
अंगरेजीख्वां बहू ख़सम पर हुक्म चलाती है ॥ ५

भजन नं० २५

तुम सेवो प्यारी प्रीतिसे; नित चर्खा चूल्हा चक्की ॥ टेक ॥
जो इनकी सेवा करती हैं।
कभी नहीं भूखी मरती हैं ॥
जोड़ द्रव्य भू में धरती हैं।
वह बचें पाप अनरीति से ॥
हो देह पुष्ट अति पक्की; नित चर्खा चूल्हा चक्की ॥
अंजन से पिस आटा प्यारी,
होता है पचने में भारी ॥
जिसको खाकर हो बीमारी।
जलकर हो खाली तीत से ॥
जौ ज्वार बाजरा मक्की; नित चर्खा चूल्हा चक्की ॥ २ ॥
नित बजार से खाने वाली।
भूखी मरती हैं मतवाली ॥
हित से करो रसोई आली।
चूल्हा रक्षक है सौत से ॥
चूल्हा फिरे भसक्की; नित चर्खा चूल्हा चक्की ॥ ३ ॥

चर्खे का है महात्म भारी।
इसको क्या समझावें प्यारी॥
"राम" पूज्या है वह नारी।
जो रहती है इस नीति से॥
वह फिरे न हक्की बक्की, नित चर्खा चूल्हा चक्की॥ ४

भजन नं० २६

चला चल चर्खे चोखी चाल।
सजा हुआ है विविध भाँति, से धारे उर में माल।
चलाचल चर्खे चोखी चाल॥ १॥
भारत के कोने कोने से सन सन करके यार।
करके रहना सूत सभी विधि सस्ता साफ तयार॥
बुनें हम देशी शाल दुशाल।
चलाचल चर्खे चोखी चाल॥ २॥
पतला मोटा सुथरा निखरा सब प्रकार का सूत।
कात कात कर ढेर लगाते जाना तुम मजबूत॥
न कोई कृषक रहे कंगाल।
चलाचल चर्खे चोखी चाल॥ ३॥
भारत का तू भाग्य विधाता बना हुआ है आज।
चाल ज़रा मत धीमी करना है तेरे कर लाज॥
न नत हो भारत भाल विशाल। चलाचल०॥ ४॥

रसिया नं० २७

बालम मैं अँगरेज़ी पढ़ी न रोटी कभी बनाऊँगी ॥ टेक ॥
चून्हा फूंकत मेरो मुख झुलसैगो,
दोऊ दृगन से जल बरसैगो।
काला मुंह पड़ जाय न चूल्हे आग जलाऊंगी ॥ बालम०
बर्त्तन मांजत मेरे नख बिगड़ेंगे,
दोऊ करों पै दाग़ लगेंगे।
धीमरि बन कर कभी न झूंठे थाल उठाऊंगी ॥ बालम०
कौन बात में मैं हेटी हूं,
तुमसे कमती नहीं पढ़ी हूं।
बडे बाप की मैं बेटी हूं, क्यों शर्माऊंगी ॥ बालम०
जो तुम मुझसे रार करोगे,
अपने दुख को आप भरोगे।
मैं न्यारी हो जाऊं, लक्ष्मी आप कमाऊंगी ॥ बालम०
[illegible] इंगलिश पढ़ी यों नारी,
चुपके रहो नहिं दूंगी गारी ॥
नारी नर का सम अधिकार, लिखा वेदों में दिखाऊंगी ॥
कोट बूट पतलून, पति तुमसे बनवाऊंगी।
है अँगरेज़ी राज्य, मैं शर्म्मा मौज उड़ाऊंगी ॥ बालम०

रसिया नं० २८

या अंगरेज़ी पढ़ी बहू से राम बचावै जी।
जा दिन ते मेरे घर आई। बैठे बैठे मौज उड़ाई।
पलका पै पसरी पसरी नित रार मचावैजी॥ १
चक्की चून्हा नाम नसावे। भोजन भाजी एक न आवे।
गिटपिट करती रहै रात दिन हुक्म चलावैजी॥ २
होज़ सिलीपर कालर टाई। मफ़लर तितली-पीन लगाई।
दिन भर में दस फ़ैशन न्यारी नित्य बनावैजी॥ ३
शील शरम संकोच न जाने। नित्यकर्म कुल धर्म न माने।
लक्ष्मी सी कुल ललनाओं को बुरा बतावैजी॥ ४

भजन नं० २६

पहनो पहनोरी सुहागिन ज्ञान गजरा।
दया-धर्म की ओढ़ो चुनरिया,
शील का नेत्रों में डारो कजरा।
लाज करो तुम पर-पुरुषों से,
अपने पति का देखो मुखरा॥
सास-ससुर की सेवा कीजो
अपने पति से न कीजो झगरा।
कहे 'अनाथ' बिन विद्या रो बहनो!
सहती हो तुम अति दुखरा॥

भजन नं० ३०

ध्यान धर देखनारी नहीं औलाद मिले पूजन से।
क़ब्र ताज़िये ज़िन्द फरिश्ते कितनेहु पूजो प्यारी।
बकरा मुर्ग़ा घेंटा काटकर बनी फिरो हत्यारी ॥१॥
चाहे पूजो काली माई या पूजो चामुण्डा।
चाहे स्यानों को बुलवा कर बांधो गले में गण्डा ॥ २ ॥
पूजो मियां और मसानी आक ढाक जञ्जाला।
दिन और रात न्हवालो पत्थर तौऊ न मिले नँदलाला ॥३॥
बुला बुला के घर में जोगिया ज़ाहिर पीर मनालो।
चाहे पोप जी को बुलवा कर दुर्गापाठ करालो ॥ ४ ॥
दुबक छिपक कर सास ससुर से कितना ही माल लुटादो।
स्याने दिवाने लुच्चे गुन्डों को पूरी भात खिलादो ॥५॥
'रामचन्द्र' की आज्ञा मानो यही वेद की शिक्षा।
अशुभ कर्म्म तज पतिव्रत धारो सुफल होय तब कुक्षा ॥६

भजन नं० ३१

बहनो री करलो सच्चा सिङ्गार ॥
जिस सिङ्गार से प्रभु मिल जावे, सब का प्राण अधार।
जिस भूषण में होवे न दूषण करो उसीसे प्यार ॥
सच्चा भूषण है यह विद्या, लूटे न चोर चकार।

ना वह टूटे ना वह घिसती जिसका लगे न भार ॥
पति के प्रेम की माला पहिनो सेवा समझलो हार।
धर्म-चर्चा की चूड़ी समझो, आरसी तत्व विचार॥
पति की आज्ञा की नथ इक समझो भक्ति को कङ्कन जान।
व्याह के प्रथम हँसली सो हँसली शील को हंसली जान॥
विद्या-धर्म दो झुमके बनालो; टीका पर-उपकार।
बिन्दी वंदना स्वामी को करना; ज्ञान का सुर्मा डार॥
मुकुन्द कहें तब सुख से रहोगी, मान करे संसार॥

भजन नं० ३२

सजले साज सजीले सजनी;
मान बिसार मनाले वर को ॥ टेक ॥

गौरव-अङ्गराग मलवाले; मेल-मिलाप तेल डलवाले।
न्हाले शुद्ध सुशील सलिल से, काढ़ कुमति मैली चादर को।
स० सा० स० स० मा० म० वर को।
ओढ़ सुमति की उज्वल सारी; सद्गुण भूषण धार दुलारी।
सीस गुंदाय नीति नाइन से; कर टीका करुणा केसर को॥
स० सा० स० स० मा० म० वर को।
आदर अञ्जन आंजनवेली; खाकर प्रेम-पान अलबेली।
धार प्रसिद्ध सुयश की शोभा; दमकाले आनन सुन्दर को।
स० सा० स० स० मा० म० वर को।

मेरी गात भान अवसर है; यौवन काल बीतने पर है।
तू यदि अब न रिझावेगी तो; फिर न सुहावेगी शंकर को।
स० सा० स० स० मा० म० वर को।

भजन नं० ३३

मेरे सुकुमार वर के सर सखी सेहरा मुबारक हो।
सजीला है मुकुट सर पर सखी सेहरा मुबारक हो॥ १
सुमन यह अति सरस सुन्दर सुगन्धित हैं चमेली के।
यह गूंथा है बड़ा श्रम कर सखी सेहरा मुबारक हो। २
जड़े माणिक्य मोती और हीरे इस मुकुट में हैं।
हरा सर और कोमल तर सखी सेहरा मुबारक हो॥
बहुत इतराय थी पगड़ी बने के सर पै चढ़ करके।
मगर उसने लिया नम्बर सखी सेहरा मुबारक हो॥ ४
बनाया सुकुमार को ही दया से इसको कविवर ने।
इसी से है बड़ा सुन्दर सखी सेहरा मुबारक हो॥ ५

भजन नं० ३४

टेक—बनेरी बना श्रीराम सुकुमार।
सिर सोने का मुकुट बिराजे गल फूलों का हार।

अंग तेरे केसरिया जामा ज़रदोज़ी बुरकार ॥
बनेरी बना श्रीराम सुकुमार ॥ १
गज की उत्तम सजी सवारी आरही अजब बहार।
पांव तेरे चमकीला जूता चमकदार ज़रतार ॥
बनेरी बना श्रीराम सुकुमार ॥ २
खुश हो मात बलैया लेती होते पिता निसार।
चिर जीवो सुख सम्पति बाढ़े रहे राम का प्यार।
बनेरी बना श्रीराम सुकुमार ॥ ३

भजन नं० ३५

बन रहा नौशह लाल मेरा हरियाला बनरा।
शिर तेरे पचरंगी चीरा, घूंघर वाले बाल ॥
मेरा हरियाला बनरा ॥ १ ॥
कमर तेरे गुजराती पटका लटक रही करवाल।
मेरा हरियाला बनरा ॥ २ ॥
पाँच पान का बीड़ा चाबे मोती होगये लाल।
मेरा हरियाला बनरा ॥ ३ ॥
केसर की मरुवट है मुख पर दिपै सूर्य सम भाल।
मेरा हरियाला बनरा ॥ ४ ॥

पाँव तेरे पंजावी जूता चले अकड़ कर चाल।
मेरा हरियाला बनरा ॥ ५ ॥
रान तेरे है चंचल घोड़ा चलता दुलकी चाल।
मेरा हरियाला बनरा ॥ ६ ॥
संग तेरे भाइयों की जोड़ी अति प्रसन्न खुश हाल।
मेरा हरियाला बनरा ॥ ७ ॥
राम विनय तुमसे है मेरी सदा करो रखवाल।
मेरा हरियाला बनरा ॥ ८ ॥

भजन नं० ३६

बन रहा नौशह लाल मेरा सठसाला बनरा।
शिर तेरे पचरंगी चीरा, होगये धौरे वाल ॥
मेरा सटसाला बनरा ॥ १ ॥
कमर तेरे गुजराती पटका, लटक गई है खाल।
मेरा सठसाला बनरा ॥ २ ॥
दांत नहीं हैं बीड़ा खाता मुंह से टपके राल।
मेरा सठसाला बनरा ॥ ३ ॥
केसर की है मरुवट मुख पर पटक गये हैं गाल।
मेरा सठसाला बनरा ॥ ४ ॥
पांव तेरे ज़रदोज़ी जूता, चले डगमगी चाल।
मेरा सठसाला बनरा ॥ ५ ॥

हाथी की है तेज़ सवारी अंग रहे सब हाल।
मेरा सठसाला बनरा ॥ ६ ॥
संग तेरे पोतों की जोड़ी, अजब बना है हाल।
मेरा सठसाला बनरा ॥ ७ ॥
राम लगी रटना है तुमसे काटो दुख के जाल।
मेरा सठसाला बनरा ॥ ८ ॥

भजन नं० ३७

अवल सखी मिलि बरना गावें नवल सखीं ॥ टेक।
बरना गावें शब्द सुनावें मधुर मधुर निज सुर दरशावें।
नवल सखी० ॥ १ ॥
नर और नारि सीस बरनाके सुभग फूल माला बरसावें ॥ २
परम सुहावन बजत बाजने विविध भांति घर द्वार सजावें ॥ ३
मुदित मगन मन सब पुरवासी मंगलचार मनावें ॥ ४

भजन नं० ३७

टेक—जननी तुम्हारो बरना तुम्हारो बरना कैसो हुशियार॥
कैसी भेद की वाणी बेद की वाणी भाषत हरबार ॥ १
पूरा रहा ब्रह्मचारी रहा ब्रह्मचारी करता उपकार ॥ २

सबही करै शुभकाजा करै शुभकाजा वैदिक अनुसार ॥ ३
बाजू बिमल अति सोहै बिमल अति सोहै फूलन गलहार॥ ४

भजन नं० ३८

चिरंजीवै महाराज मेरा हरियाला बनरा।
मूंछ कटाय के छोटी करलई, दाढ़ी दई मुड़ाय ॥ मेरा०
तन बन्ने के अतलस का बागा लटक रही सब खाल ॥ मे०
कमर बन्ने के गुजराती पटका, चले डगमगी चाल ॥ मे०
सर बन्ने के सोने का सेहरा सर के धौले बाल ॥ मे०
मुख बन्ने के पानों का बीड़ा, जैसे ऊंट चबात ॥ मे०
क्या छवि बरनूं मैं मुखड़े की; मुख में नहीं एक दांत ॥ मे०
आठ वर्ष की कन्या कुमारी, बूढ़े को दी दया बिसारी ॥ मे०

भजन नं० ३९

टेक—दिन आज मोरी सजनी कैसो लगे।
मधुर मधुर धुनि बजत बाजने बरना के सिर ताज़।
मोरी सजनी कैसो लगे० ॥ १ ॥
सुन्दर आंगन भवन अति सुन्दर, सुन्दर साज समाज
मोरी सजनी कैसो लगे० ॥ २ ॥

मोद विनोद करत सब डोलत होय सकल शुभ काज
मोरी सजनी कैसो लगे० ॥ ३ ॥
बाबू 'मंगलचार' मनावें सोहति धर्म रिवाज
मोरी सजनी कैसो लगे दिन आज० ॥ ४ ॥

भजन नं० ४०

टेक—हमारे वरना आवेंगे, वरनी करत विनोद हमारे।
धर्म रीति से चढ़े वरात, वरना वचन भरेंगे सात।
तभी प्रीतम कहलावेंगे। वरनी करत विनोद ॥ १ ॥
भामर फिरें प्रानपति चार, रचें विवाह धर्म अनुसार।
वेद के मन्त्र सुनावेंगे। वरनी करत विनोद ॥ २ ॥
चहुं दिश दीखे अजब बहार; गावें सखी 'मंगलाचार'।
फूल माला पहिरावेंगे। वरनी करत विनोद ॥ ३ ॥
वहिना एक सोचकी बात, मात पिता भगनी निज भ्रात।
सबसे मुझे छुटावेंगे। वरनी करत विनोद ॥ ४ ॥

भजन नं० ४१

सदा रहै वरनी पति प्यारी सदा रहै।
आल जाल सब छोड़ सखीरी, करै पिया की तावेदारी।
सदा रहे वरनी पति प्यारी ॥ १ ॥

विद्या पढ़े रहै सुचलन से, शीलवती होवे गुणकारी।
सदा रहे वरनी पति प्यारी ॥ २ ॥
कभी परस्पर हो न विमुखता, ईश्वर राखे सर्वसुखारी।
सदा रहे वरनी पति प्यारी ॥ ३ ॥
यही असीस हमारी पावै, गहै पतीव्रत सुता तुम्हारी।
सदा रहै बरनी पति प्यारी ॥ ४ ॥

भजन नं० ४२

आली तुम्हारी वरनी, तुम्हारी बरनी कैसी सरबोर
आली तुम्हारी बरनी ॥ टेक
सुन्दर सुभग मृग नैनी सुभग मृग नैनी चंदा की कोर।
आली तुम्हारी बरनी ॥ १ ॥
कैसी पढ़े विद्या पढ़े विद्या बोलत हैं जिम मोर।
आली तुम्हारी बरनी ॥ २ ॥
बरनी तेरे गुण गावें तेरे गुण गावें कामिनि चहुँ ओर।
आली तुम्हारी बरनी ॥ ३ ॥
बरनी मधुर धुनि बोलै मधुर धुनि बोलै सबसे कर जोर।
आली तुम्हारी बरनी, कैसी सरबोर ॥ ४ ॥

भजन नं० ४३

हृदय से अब मत दूर हटाना।
दीन दुखित जन के हृदयों पर दया भाव दरसाना।
नव अंकुर विकसित विरुले पर प्रेमबारि बरसाना॥
मन मोहनि माधुरि मूरति का मृदु माधुर्य चखाना।
सरल शुद्ध निष्कपट भाव से मुझको हृदय लगाना॥
एकवार कर ग्रहण किया तो जीवन अन्त निभाना।
प्रेम भरी वीणा गा गा कर हरिणी मुझे वनाना॥
शीलाभरण कराके धारण नित कृत कृत्य कराना।
कर्णधार बन लक्ष्मी-जीवन-नैय्या पार लगाना॥

भजन नं० ४४

करते विवाह यदि आप वचन ये मुझको दे दीजै॥ टेक॥
नित प्रेम भाव से रहना; सुख दुख समान हो सहना।
कटुशब्द न मुख से कहना; प्रेमरस हिलमिल कर पीजे॥ १
सम्मति मिलकरके करना; पड़ने पै भीर नहीं डरना।
चित दुराचार नहीं धरना, नियम यह स्वीकृत करलीजै। २
धन धान्य स्वगृह में भरना, परमार्थ प्रीति से करना।
सत् धर्म नाव ले तरना, देश दुख काट छांट कीजै॥ ३
संतति विद्वान् वनाना, उनको सत् ज्ञान सिखाना।
सच्चा आदर्श वनाना, लक्ष्मी जिन्हें देख रीझै॥ ४

भजन नं० ४५

वचन दो सात जब मुझको तभी पत्नी बनाना जी।
करो इक़रार पञ्चों में तो फिर पीतम कहाना जी ॥
अगर पत्नी बनाते हो मुझे दिलजान से इस दम।
तो साहब दोस्ती अबकी हमेशा तक निभाना जी ॥
न रखना कुछ दग़ा दिल में न रहना बेवफ़ा होकर।
न कोई बात तुम घर की कभी हमसे छिपाना जी ॥
बिला सोचे बिला समझे न मेरा दिल दुखाना तुम।
किसी तकलीफ़ में मुझसे अलहदा हो न जाना जी ॥
बनो हर तौर से साथी रहो दुख दर्द में शामिल।
कि मुमकिन हो सके जैसे मेरा पालन कराना जी ॥
जो गर हमराह हों मेरे सखी हम-जोलियां जिस दम।
तो सबके सामने मेरी न इज़्ज़त तुम गमाना जी ॥
न करना ख़्वाब में भी तुम किसी पर-नारि से प्रीती।
मुहब्बत तोड़ कर हमसे न ग़ैरों से लगाना जी ॥
वचन जो आज दो मुझको इन्हें 'बाबू' लहे दिल से।
हमेशा हर घड़ी हर दम न हरगिज़ तुम भुलाना जी ॥

भजन नं० ४६

मैं मानूंगा सभी जो आपकी ज़ाहिर ज़बां होगा।
मगर पैमान मेरा भी तुम्हें करना रवा होगा॥
कि यानी जिस तरह तुमने अहद हमसे कराये हैं।
उसी विधि आपको इक़रार करना बे गुमां होगा॥
सदा दिलजान से रहना मददगारे दमे आख़िर।
तुम्हारे बिन न कोई ख़ास मेरा पासबां होगा॥
गुज़र करना उसीमें तुम कि जो कुछ मैं कमा लाऊँ।
निभाना धर्म का हरतौर से ही जाविदां होगा॥
देखकर शान औरों की न हरगिज़ तुम हसद करना।
नतीजा रश्क का हरदम ख़राबी का निशां होगा॥
किसी दुख, दर्द, आफ़त में न होना तुम अलग हमसे।
उसी पर बस यक़ीं करना कि जो मेरा बयां होगा॥
कभी भी ग़ैर मर्दों की न लाना ख़्वाहिशें दिल में।
मुहब्बत और से करना न, तुमको दिलबरां होगा॥
जो इतनी बात 'बाबू' की खुशी से आज मानोगी।
तो फ़िर ख़िदमत तुम्हारी में मेरा दिल शादमां होगा॥

भजन नं० ४७

बचन देता हूं मैं तुझको तुझे प्यारी बनाऊंगा।
मगर मैं चन्द बातों का अहिद तुझसे कराऊंगा॥
तुझे मैं धर्म की ख़ातिर जो अर्धाङ्गिन बनाता हूं।
अहिद ता उम्र अपने से न पग पीछे हटाऊंगा॥
मगर तामील हुक्मों पर मेरे रहना कमर बस्ता।
हुई इस काम में ग़लती तो फिर नीचा दिखाऊंगा॥
सिवा मेरे जो कोई नर हो चाहे कितना ही बिहतर।
जो की कभी ख्त़ाव में ख्व़ाहिश तो दिल तुमसे हटाऊंगा॥
गृहाश्रम के लिये तुमको किया संगिन व सहधर्मिन।
कठिन इस धर्म आश्रम को तेरे बिन कर न पाऊंगा॥
विपत्ति सम्पत्ति में हरदम हमारे साथ में रहना।
गुज़ारा उसमें ही करना कि जो कुछ मैं कमाऊंगा॥
दग़ा राखो जो कुछ दिल में तो अपने दिल की तुम जानो।
मगर मैं धर्म से अपना बचन पूरा निबाहूंगा॥
बचन बलदेव के इतने जो हैं स्वीकार सतचित से।
तो फिर दिलजान से प्यारी तेरी ख़िदमत बजाऊंगा॥

भजन नं० ४८

तुम से बचन भरा के पत्नी बनाऊंगा मैं।
जो २ करूं प्रतिज्ञा; पूरी निभाऊंगा मैं॥ १॥

पहिली तो बात यह है, सुनलो ऐ प्राणप्यारी।
गर हो पढ़ी तो अच्छा, वर्ना पढ़ाऊंगा मैं ॥ २ ॥
सच्चा तो व्रत यही है, प्रण आज जो करोगी।
व्रत रह के भूखों मरना, हर्गिज़ न चाहूंगा मैं ॥ ३ ॥
अबतक पाखंड तुमने जो कुछ किया सो कीया।
छुड़वा के पोप लीला, आर्य्य बनाऊंगा मैं ॥ ४ ॥
जब २ मिलो किसी से, तब २ झुका के सरको।
कर जोड़ कर नमस्ते, तुमसे कराऊंगा मैं ॥ ५ ॥
ईश्वर बिना किसी की पूजा न करने दूंगा।
मीरा मसान क़बरें, पूजन छुड़ाऊंगा मैं ॥ ६ ॥
तकलीफ़ में तुम्हारी, बेशक रहूंगा साथी।
लेकिन बुला के स्याने, हर्गिज़ न लाऊंगा मैं ॥ ७ ॥
माता पिता सम्बन्धी, भाई बहिन कुटुम्बी।
कड़वा वचन किसी से, सुनने न पाऊंगा मैं ॥ ८ ॥
भारत की सारी नारी, मूर्खा हुईं बेचारी।
उनको धर्म की शिक्षा तुमसे दिलाऊंगा मैं ॥ ९ ॥
माता पिता की सेवा, प्रीती से करनी होगी।
दीनों पशू की रक्षा तुमसे कराऊंगा मैं ॥ १० ॥
सन्ध्या हवन वो पितृ, बलिवैश्वदेव अतिथी।
नित पाँच यज्ञ करना तुमको सिखाऊंगा मैं ॥ ११ ॥
मेले तमाशे तीरथ, संगीत नाच रंग में।

जो जो हैं ये कुरीती, सारी हटाऊंगा मैं ॥ १२ ॥
भोजन व वस्त्र भूषण, तुमको मिलेंगे प्यारी ।
लेकिन फ़िज़ूल ख़र्ची, करना छुड़ाऊंगा मैं ॥ १३ ॥
अब वासुदेव तुमने, शिक्षा करी जो हम.ो ।
जहां तक बनेगा मुझसे, मानूं मनाऊंगा मैं ॥ १४ ॥

भजन नं० ४६

देखोरे भाइयो ! ऐसे विवाह रचाना ।
वर कन्या हों जवान दोनों, सुन्दर जोड़ी मिलाना ॥ भा०
वर हो मन्त्र खुद पढ़नेवाला, ऐसी ही हो विदुषी वाला ।
अब है ज़माना आने वाला, गुण अरु कर्म स्वभाव;
यथा विधि तुमको पड़े मिलाना ॥ भाइयो ! ऐसे० ॥ १ ॥
चाहिये मंडप को सजवाना, बड़े बड़े पंडित बुलवाना ।
उत्तम उत्तम यज्ञ रचाना, सुन्दर हों व्याख्यान ।
जगत् से सारी कुरीति मिटाना ॥ भाइयो ! ऐसे० ॥ २ ॥
तुमतो बाल विवाह रचाते, मामा जिनके गोद उठाते ।
पेरा* तो अब नहीं खाते, कौन प्रतिज्ञा मन्त्र पढ़े.
जहँ नींद में हो ग़लताना ॥ भाइयो ! ऐसे० ॥ ३ ॥
रंडी भांडों का बुलवाना, अपनी बाग़ो बहार लुटाना ।
मतलब समझ नहीं शर्माना, आतिशबाज़ी फूंक के,
पाठक धन की धूलि उड़ाना ॥ भाइयो ! ऐसे० ॥ ४ ॥

भजन नं० ५०

हुआ वैदिक विवाह जो ये हरेक घर हो तो ऐसा हो।
सुने ध्वनि ओ३म् स्वाहा की, सुभगवर हो तो ऐसा हो॥
उमर में हैं युवा दोनों; गुणों में भी बराबर हैं।
जो कन्या हो तो ऐसी हो; अगर वर हो तो ऐसा हो॥
बुलाया इष्ट मित्रों को, दिखाया व्याह सतयुग सा।
जमा किये देवता देवी, समधि गर हो तो ऐसा हो॥
नहीं है नाच रंडी का, नहीं भांड़ों की कुछ चर्चा।
न आतिशबाज़ी फ़ुलवारी, स्वयम्वर हो तो ऐसा हो॥
सजाया बेल बूटों से; बनाया खूब ही मण्डप।
किया वेदोक्त सब कुछ ही, धरम पर हो तो ऐसा हो॥
बुला पण्डित ये विद्धद्धर, सुनाये धर्म के लेक्चर।
रचा यों यज्ञ बड़ा सुन्दर, निडर गर हो तो ऐसा हो॥
उठो पाठक सँभल बैठो; कि वैदिक वायु बहता है।
नहीं रोके रुकेगा अब समा गर हो तो ऐसा हो॥

भजन नं० ५१

भूल मत धन की करो बखेर॥

भूखों को मिलती नहीं कौड़ी मोढ़े लेते ढेर।

लूले लंगड़ों को मुसटंडे भू में देते गेर॥
भूल मत धन की करो बखेर॥

भूखे मरकर दौलत जोड़ी अब बन गये कुबेर।
धन जुड़ता मुश्किल से मित्रो बिगड़त लगे न देर॥
भूल मत धन की करो बखेर॥

विमुख दीन गौ; विधवा रहतीं छीन लेत धन शेर।
तुमसे लेकर तुम्हें सतावें यह कैसा अन्धेर॥
भूल मत धन की करो बखेर॥

यह धन विधवन दुखियन को दो करें आयु को तेर।
दीन अनाथन को अपनाओ सुनो राम की टेर॥
भूल मत धन की करो बखेर॥

भजन नं० ५२

लुटाओ मत प्यारे बाग बहार। टेक।

है कटुकर्ण शब्द यह कंटक अशकुन अशुभ अपार।
सर्वनाश के समय कहत हैं लुटी अमुक फुलवार॥
लुटाओ मत प्यारे बाग बहार॥ १॥

कागज़ पत्तर फट फटाय कर फिरते गली मंझार।
झूंठी शोभा तनिक देर की करती धन की हार॥
लुटाओ मत प्यारे बाग बहार॥ २॥

फुलवारी और बाग बहारी के लुटने का बार।
सुन कर शब्द तीर की नाईं होत कलेजा पार।
लुटाओ मत प्यारे बाग बहार॥ ३॥
इस धन के ले वस्त्र दीजिये अधिकारिन उपहार।
होय बड़ाई उससे दूनी राम होय उपकार॥
लुटाओ मत प्यारे बाग बहार॥ ४॥

भजन नं० ५३

ब्रह्मचारी नगर में आये सखी चल दरशन कर आवें।
पीत वसन पावन मन भावन रंग सुरंग सुहावें।
सुन्दर परम मनोहर मूरति देखत ही बनि आवें॥
सखी चल दरशन कर आवें॥ १
सन्ध्या करत समाधि लगाये मन्त्र मनोज लजावें।
गावत गीत प्रेम सरसावत सब भ्रम भेद मिटावें॥
सखी चल दरशन कर आवें॥ २
शीश जटा मकराकृत कुण्डल अंग विभूति लगावें।
लक्ष्मी शान्ति स्वरूप विराजे सब के मन हरषावें॥
सखी चल दरशन कर आवें॥ ३

भजन नं० ५४

बनरा बनरी ब्याहन आया ॥ टेक ॥
धन्य भाग्य लाड़िली वधू के।
सुघड़ चतुर वर पाया ॥
मूर्ति मोहिनी सौम्य-सोहिनी।
रूप—रङ्ग मन—भाया ॥
'अमीचन्द' चिरजीवै जोड़ी।
विधि ने जोड़ मिलाया ॥

भजन नं० ५५

सखि गाओ मंगलाचार सजन ब्याहन आये।
सुन्दर रूप सलोने सबही साथी सङ्ग सुहाये ॥
आर्य धर्म कर्म प्रति पालक समधी सज्जन पाये।
बर बरनी बर वेद पढ़े हैं विधि ने योग मिलाये ॥
वैदिक रीति रचीं विधि सारी वेदी विप्र बिठाये।
धारण किया गृहस्थ धर्म को प्रणयन मंत्र पढ़ाये।
लक्ष्मी जोड़ी जुग जुग जीवें आशिष बचन सुनाये ॥

भजन नं० ५६ (कुंडलिया)

नारी जुरती व्याह में शोभा देंय अपार।
बुरे बुरे बचनार के गाती गीत सम्हार॥
गाती गीत सम्हार नाम मरदों का लेके।
भाई बहिन ना मान सुनावें गारी देके॥
कहिं श्री ब्रह्मानन्द कुचालहि देव निवारी।
करती हैं व्यभिचार इसी कारण से नारी॥

भजन नं० ५७ (गारी)

बिन विद्या भारत देश लुट गयो सुन सजनी॥
विद्या गई अविद्या छाई जब से भारत देश।
घर घर अरु भाई २ में नित प्रति होत कलेश;
रहो न कोई विद्या को धनी॥ १
हेल मेल के पौधा कट गये जब से उपजी फूट।
फूट खाय सब भये बावरे लेगये माल विदेशी लूट;
दग़ाबाज़ों की आन के बनी॥ २
इन वरुअन ने बेन बजा के मोह लिए विषयर कारे।
बन्द पिटारों में कर लीने सारे ज़हर निकारे,
उतार लई माथे की मनी॥ ३

ख्याल करा अरु सोचो मन में जिन्हें बताते कारे।
लन्दन अरु अमरीका वारे थे अर्जुन के सारे;
हमारी जब बन्ता थी वनी ॥ ४
दुर्योधन समझाया कृष्ण ने माना नहिं हरवार।
सुई बराबर राज न दूंगा कर लीनी कुटुम्ब की छार;
लड़ाई जब दोनों में ठनी ॥ ५

भजन नं० ५८ (गारी)

बिन विद्या दुर्गति होय; हमारी हरे २ हमारी सुनि सजनी॥
कहैं पौराणिक पंडित हमसे तुम्हें नहीं अधिकार।
शूद्र बतावत हैं हम सबको आप बनें दातार॥
फटति नाहें धरनी ॥ १ ॥
बन्द कियौ हमरो सब पढ़नो कैसी बात बिगारी।
दिन २ मूरख होंहि तभी से दुख भोगति हम भारी॥
रह्यो न कोई धीर धनी ॥ २ ॥
मन्दालसा पढ़ी थी इतनी जाकौ पार न पायौ।
अपने सुत दोउन कूं वानें ब्रह्मज्ञान बतलायौ॥
कथा में ऐसी सुनी ॥ ३ ॥
राम मातु कौशल्या का था नेम धरम से जीना।

मन्त्रों से आहुति देतीं थीं हवन करें रोजीना ॥
रहै प्रभु की शरनी ॥ ४ ॥
बड़ी गान विद्या में मीरावाई थी बड़भागी ।
भजन बनाये ऐसे वाने, पढ़त होंय वैरागी ॥
करी अद्भुत कथनी ॥ ५ ॥
लीलावति ने अंक गणित की पुस्तक एक बनाई ।
जिसके प्रश्न गणित वालों के छक्के देहिं छुड़ाई ॥
धन्य ताकी करनी ॥ ६ ॥
कलावती ने अपने पति को विद्या दई पढ़ाई ।
लक्ष्मी देवी ने मिताक्षरा टीका दियो है छपाई ।
पढ़ी जानें कितनी ॥ ७ ॥
कहा कहूं मन्दोदरि सीता द्रौपदि की चतुराई ।
अनुसूया ने जनकसुता को नारि नीति सिखलाई ॥
गई पति संग वनी ॥ ८ ॥
हमरौ पढ़नों वन्द करि दियो है जिन को धिक्कार ।
'अन्तराम' ऐसे मूढ़न की जिह्वा देहु पजार ॥
कुमति जिन माहिं ठनी ॥ ९ ॥

भजन स्त्रीव्रत नं० ५९

दोहा अवलाओं की क्या ख़ता क्यों देते हो दोष ।
ख़ता आपकी है सभी; रहो मित्र ख़ामोश ॥

हमारे देश में जी; कैसे करें पाप व्यभिचारी ॥ टेक ॥
निज स्त्री को जूती बताकर; उपमा उससे देते ।
पर-स्त्री-गमन में पाप न समझे, वृथा बीज हैं बोते ॥ १
जूती पुरानी जब हो जावे, अन्य मोल ले लेवें ।
इसी तरह से प्यारी सखियो; नारि और करि लेलेवें ॥ २
निज स्त्री को पतिव्रत रहना, हैं ये पुरुष सिखाते ।
अपने लिये कुछ नहीं धर्म है, करें कार्य मन भाते ॥ ३
निज स्त्री है भूखों मरती; नाना दुःख उठावे ।
कब सम्भव है ऐसी नारी, पतिव्रत धर्म निभावे ॥ ४
निज पत्नी को अन्य जगह पर, जब यह देखें जाते ।
मार डालने में उसको ये, शंका ज़रा नहिं लाते ॥ ५
पाप बढ़ा है जो दुनियां में, उन पतियों ने है बढ़ाया ।
स्त्रीव्रत को नहिं जो पालें, घोर पाप फैलाया ॥ ६
वेश्यागमन को धर्म समझते; निज पत्नी बिलखावें ।
धर्म धनादिक सर्व गँवाकर, अन्त नर्क में जावें ॥ ७
धर्म बचाना इन पतियों से, हुआ कठिन है भारी ।
स्वयं बिगड़ कर पुत्र बिगाड़े; करी धर्म की ख्वारी ॥ ८
पहले पुरुषा हुये हमारे, ब्रह्मचर्य व्रत धारी ।
पर स्त्री माता सम समझें भीष्म से प्रणधारी ॥ ९
पत्नी कहती सुनो नाथ तुम बनो स्त्रीव्रत धारी ।
निज पत्नी को धर्म सिखाओ; बने पतीव्रत नारी ॥ १०

भजन (चूड़ाकर्म संस्कार) नं० ६०

तुम मूँड़न देउ कराय हमारे ललना को।
यह पतनी वचन उचारे पति मन में सोच विचारे ॥
हमारे ललना को ॥ १ ॥
बालक भये द्वादस मासा प्रभु पूजे तुम्हारी आशा ॥ २
आवश्यक वस्तु मंगाओ मूँडन का यज्ञ कराओ ॥ ३
बुलवाओ हित व्याहारी घर कुनबा मान्य हमारी ॥ ४
शुभ सायत दिन ठहराओ गोबर से आंगन लिपाओ ॥ ५
अंगना कुण्ड बनाओ तापै वेद मन्त्र लिखवाओ ॥ ६
साठी की खीर पकाओ इत मोहन भोग धराओ ॥ ७
पण्डितगण वेद उचारें स्वाहा कर आहुति डारें ॥ ८
जब पूर्णाहुति कर लीनी मूँडन की तैयारी कीनी ॥ ९
चतुर बुलाओ नाई पैनों सो छुरा मंगाई ॥ १०
छुरा पर सिल्ली धराओ पैनी धार कढ़ाऔ ॥ ११
इकचित हो मूँडन कीजो नहिं सिर में खुरसट दीजो ॥ १२
जब मान्य लुटरिया लीनी ललना को आशिष दीनी ॥ १३
विधि पूर्वक मुण्डन कीना नाई पारतोषिक लीना ॥ १४
विप्रन कूं दान अनेकनि नहिं शक्ति हमारी लेखनि ॥ १५

भजन (अन्न प्रासन संस्कार) नं० ६१

है आज मेरे लाल का अन्न पिरासन है आज। टेक।

छै महीना जनमे भये सुत को सतवां महीना है आज।
है आज मेरे लाल का० ॥ १ ॥

बढ़ती समझकर पाचनशक्ती दांतों का होता अग़ाज।
अग़ाज मेरे लाल का० ॥ २ ॥

सब सम्बन्धी अपने बुलाये बैठे हैं जोरे समाज।
समाज मेरे लाल का० ॥ ३ ॥

मखमल के बहु विछे विछौना पण्डित रहे हैं विराज।
विराज मेरे लाल का० ॥ ४ ॥

हवन करा के दान दिये बहु भोजन अशर्फी अनाज।
अनाज मेरे लाल का० ॥ ५ ॥

साठी मखाने की खीर बनाई प्यारे दुलारे के काज।
काज मेरे लाल का० ॥ ६ ॥

सोने के पात्रों में खाई लला ने बाबा की गोदी विराज।
विराज मेरे लाल का० ॥ ७ ॥

दीनी असीस सकल सज्जन ने शाही के रक्खे ये ताज।
ताज मेरे लाल का० ॥ ८ ॥

भजन [नामकरण संस्कार] नं० ६२

धरवाओ लालन को, सुन्दर शुभ नाम ॥ टेक
अब वार ग्यारवों आयौ, सब विधि से सुख सरसायौ।
घर घर तुम देहु बुलायो, सजाओ अपना धाम ॥ धर०
सुन्दर आसन बिछवाओ, उन पर फिर सबहि बिठाओ।
सब विधि सत्कार कराओ; देहु सबको आराम ॥ धर०
घी सामग्री सुधवा के, समिधा सुन्दर मँगवा के।
फिर आर्य विप्र बुलवा के, हवन करिये निष्काम ॥ धर०
जैसो गुण सुत में चाहो, तुम तैसो नाम धराओ।
हे बहिन ! न देर लगाओ, कीजिए यह शुभ काम ॥ धर०
जब नामकरण होजावे, सबसे आशीष दिलावे।
चिरआयू बालक पावे, होंय सब पूरन काम ॥ धर०
सब जुरि मिलि मंगल गाओ, अरु वेद प्रचार कराओ।
पुनि दीनन द्रव्य लुटाओ, 'धर्म धर' होवे नाम ॥ धर०

राग सरिया [जातकर्म-संस्कार] नं० ६३

महाराज ईश गुन गाइये ॥ टेक ॥
स्वामी दिये तोहि लाल, जचा कर ख्याल, न मन गरवाइये।
महाराज ईश गुन० ॥ १

सासु के लागो पांय, ससुर तर जायं, तो दाई बुलाइये।

महाराज ईश गुन० ॥ २

खपरा मैं डारो वेगि; जो दाई का नेगि; औ नाल छिवाइये

महाराज ईश गुन० ॥ ३

बोलो घर का नाई, बुलावे सब भाई, कुटुम्ब मनाइये।

महाराज ईश गुन० ॥ ४

बार बार कर जोर; निहोर निहोर, सबन सिर नाइये।

महाराज ईश गुन० ॥ ५

शुद्ध करायके भवन; कराने को हवन, के वेदी रचाइये।

महाराज ईश गुन० ॥ ६

लो भजनीक हँकार; करहिं जो प्रचार; औ भजन गवाइये।

महाराज ईश गुन० ॥ ७

देहु अनाथन दान, होय कल्यान; जगत जस पाइये।

महाराज ईश गुन० ॥ ८

वैदिक रीत्यानुसार, जनम संस्कार; विधि से कराइये।

महाराज ईश गुन० ॥ ९

'मुर्लीधर' की अशीष, कृपा जगदीश, से वंश वढ़ाइये।

महाराज ईश गुन० ॥ १०

जात कर्मसंस्कार राग-सरिया नं० ६४

प्रभू को मनाइये; महाराज ॥ टेक

जनमे आजु घर लाल; हो दीनदयाल के;
अब गुण गाइये; महाराज ॥ प्रभू० ॥

हे सन्तन प्रतिपाल; अमर होंय लाल;
तो बेलि बढ़ाइये; महाराज ॥ प्रभू० ॥

आर्य विप्र बुलवाय; लेउ बैठाय;
कि हवन कराइये; महाराज ॥ प्र[illegible] ॥

होय वेद उच्चार; बढ़ै परिवार;
अधर्म नसाइये; महाराज ॥ प्रभू० ॥

छटी होय क्या चीज़; कौन दृष्टान्त
न राशि गिनाइये; महाराज ॥ प्रभू० ॥

अन्धेनु दीजै दान; कोढ़िन कूं मान;
न संडा जिमाइये; महाराज ॥ प्रभू० ॥

लेहु अनाथ बुलाय, औ देउ जिमाय;
तो जग जस पाइय, महाराज ॥ प्रभू० ॥

दान से भरो समाज, बनें सब काज,
प्रचार कराइये; महाराज ॥ प्रभू० ।

देगे कुकर्मिन दान; तो होगी हानि;
न धर्म नसाइये; महाराज ॥ प्रभू० ॥

'धर्मधर' आज; सिद्ध भये काज;
सो मंगल गाइये;महाराज । प्रभू० ॥

माता की मनोकामना नं० ६७

पगन कब चलिहैं ये कन्हैया ॥ टेक ॥

गोद पसारत है ईश्वर से, आज लला की मैया॥ १ ॥
कब मेरे लाल अँगनमें खिलियें; कहि कहि बाबा-भैया ॥ २
कब कुछ लाल खानको मांगें, सुरभी दूध पिवैया ॥ ३
कब मेरे लाल खिलौना मांगें; सुन्दर खेल खिलैया ॥ ४
जब मेरे लाल मात उर लागें; ले ले तुरत बलैया ॥ ५
ठुनकि ठुनकि के कब मेरे लाला, मांगें पैसा रुपैया ॥ ६
कब मेरे लाल ईश गुन गावें; मुरली, अधर बजैया ॥ ७
वीर बने हे प्रभु मम लाला; कुल की नाव खिवैया ॥ ८

भजन नं० ६८

जुग जुग जीवै मेरो लाला ॥ टेक॥

हे दीनबन्धू ; कृपा के सिन्धू ; हे सन्तन प्रतिपाला ॥ १
वेद प्रचार करें निश वासर; पावै पदवी आला ॥ २
छोड़ि कुरीति सुरीति प्रचारै; हो अस कृपा कृपाला ॥ ३
वैदिक रीति पै चले हमेशा; करै कपट मुख काला ॥ ४
ब्रह्मचर्य को पाले ऐसे, स्वामी ने जैसे पाला ॥ ५
बने क्षात्र विद्या को जिससे, भागें मूढ़ कुपढ़ शृगाला॥ ६

वीर; विनीत, धर्म व्रत धारी; दानी करण भुआला ।। ७
गोद पसार के यह वर मांगू; दीजो दीन दयाला । ८

भजन नं० ६९

सुनोरी सहेली मन की भावनी आई है धर्म बहार।
मिल गुण गाओ जगदीश के उत्तम धर्म विचार ॥ सुनो०
सत्य धर्म की ओढ़ी चूनरी छोड़ असत् व्यवहार ॥ सुनो०
शील को अंजन आंखन डार के दीनन पै करो प्यार ॥ सुनो०
चित्त लगाओ पर उपकार में ज्ञान को गजरा धार ॥ सुनो०
कंठ में माला वाणी प्रेम की सगुण जड़ाऊ हार ॥ सुनो०
सत्य की पहिनो निर्मल आरसी यशनूपुर झनकार ॥ सुनो०
विद्या से मांजो निज चित्त को दुर्गुण दूर निकार ॥ सुनो०
नर तन पायो मुरली अति भलो कर लेउ सुफल सुधार ॥ सु०

भजन नं० ७०

देखो देखोरी सखी चहुं ओर कैसी ऋतु परम सुहावनी।
वेद वदरवा छाय रहे री घुमड़ि करत घन घोर।
कैसी ऋतु परम सुहावनी देखो देखोरी चहुं ओर ॥
बरसत प्रेम नीर अति सुन्दर आनन्द उठत हिलोर ॥
सज्जन सत उपदेश सुनावें जिमि कोकिल करे शोर ॥

धर्म बगीचा फूल रहो री देखो दृष्टि बहोर ॥ ४
सुभग सुमन सुख सहित गहोरी तज हर सूर कठोर ॥ ५
कुल की लाज करो प्रिय बनसे शीलवती सरबोर ॥ ६
पति पद प्रीति करो मेरी सजनी जैसे चन्द्र चकोर ॥ ७
बाबू सुमति सुमति अति हित की कहत युगल करजोर ॥ ८

गारी नं० ७१

यह दुर्दिन के हैं ठाठ सुनाऊं तोहि सुन आली ॥
ज्ञान सूर्य भयो अस्त अविद्या आन लगाई हाट ॥
लोलुप लम्पट और कुचाली भरते फिरें सपाट ॥
बकें नित प्रति गाली ॥ यह दुर्दिन०
वैदिक धर्म सत्य मारग तज फिरते बारह बाट ॥
धोबी के कुत्ते की तरियाँ घर पर रहत न घाट ॥
छाय रही मतवाली । यह०
स्वारथ में फँस दुष्ट आत्मा बने पेट के भाट ॥
लूट लूट भोले भ्रातन को खूब उड़ावें चाट ॥
आज भर भर थाली ॥ यह०
मेल एकता सुखइदान को उलट दियो है ठाठ ॥
सुवर्ण भूमि के पुत्रों पर हा ! रही न टूटी खाट ॥
बरस रही कंगाली ॥ यह०

निज जननी भारत माता को फूटो हाय ललाट ।
पूत कपूत भये अब पैदा पड़े बुद्धि पर पाट ॥
हसें दे दे ताली ॥ यह०
देश भक्त और सच्च प्रेमी होते नहीं तिराट ।
अभिमानी लम्पट और स्वार्थी लाख लगावें डाट ॥
करे है पामाली ॥ यह०
पौदे पेड़ पुराने कल्ले दिये बाग़ के काट ।
पत्ते पत्ते तक चुन लेता करता सभी सपाट ॥
न होते स्वामी माली । यह०
शर्मा जलेसरी अधरम लखि मन में होत उचाट ।
हे जगदीश देश द्रोहिन के खोलो वेग कपाट ॥
बड़े फिर खुश हाली ॥ यह०

गारी नं० ७२

तुम सुनो सकल सरदार कहैं हम हरे हरे कहैं हम करजोरी ॥
नाव हमारी आज लाज की पड़ी बीच मँझधार ।
सो तुम कृपा दृष्टि बल्ली से नाथ लगाना पार ॥
कहैं हम हरे हरे कहैं हम कर जोरी तुम सुनो० ॥
तुमसे हमको एक जगत में हम से तुम्हें हजार ।
प्रीति आप के चरणों की हम, मांगत हाथ पसार ॥

नाथ हमारा क्या बिगड़ेगा जावे लाज तुम्हार।
भूल चूक सब क्षमा कीजियो, अपनी ओर निहार। ३
प्रेम सहित हम करें निवेदन नाथ सकल नर नार।
बाबू सदा हमारे ऊपर रहना नित हितकार। ४

भजन नं० ७३ (गारी)

इन यवनन की करतूत, सुनाऊँ तोहि सुन सजनी। टेक
हुआ दुष्ट 'जैचन्द' बिगाड़ा बना बनाया काज।
मुहम्मदग़ौरी ने आकर के पकड़ा 'पृथ्वीराज'॥
बिगड़ी सब बात बनी॥ इन यवनन की करतूत०॥ १
आंखों में श्री 'पृथ्वीराज' के फेरी नील सलाई।
आंख फोड़दी इन यवनों ने, और फिर क़ैद कराई॥
दुष्टता करी घनी॥ इन यवनन की करतूत०। २
छक्के छूटे योधाओं के जब से आई फूट।
आर्य्यवर्त को पात पात कर यवन ले गये लूट॥
बहुत की फ़ना फ़नी॥ इन यवनन की करतूत०॥ ३
रजपूतों को लड़ा २ कर किया खूब कमज़ोर।
लूट मार कर भारत खण्ड में रहे मचाते शोर॥
हुकूमत कर अपनी॥ इन यवनन की करतूत०॥ ४
ग्यारह वर्ष का वीर हक़ीक़त, सूली दिया चढ़ाय।

जल्लादों को दया न आई किया बड़ा अन्याय ॥
खड़ी रोवे जननी ॥ इन यवनन की करतूत० ॥ ५
हाय ! गुरू गोविन्दसिंह के दो बच्चे सुकुमार।
दीवारों में चुनवा दिये कीया अत्याचार ॥
सूनो प्यारी भगनी। इन यवनन की करतूत० ॥ ६
मनीसिंह सरदार की प्यारी; गांस गांस दी काट।
आह न की उस शूरवीर ने; रहा लगाता डाट ॥
सही नशतर की अनी। इन यवनन की करतूत० ॥ ७
चर्खी में बहुतक उटवाये; इन यवनों ने हाय।
पिलवाये कोल्हू में सदहा; सदहा दिये नसाय।
जल्लादी डोर तनी ॥ इन यवनन की करतूत० ॥ ८
'नादिरशाह' ने हाय कराया कई दफ़ा क़तलाम।
वेद शास्त्र सब जला जला कर, किये गर्म हम्माम ॥
घरों में अगनी ॥ इन यवनन की करतूत० ॥ ९
जगह जगह पर बूचड़खाने, खोल किया अन्याय।
अनगिनती गौऐं कटवा दीं इन यवनों ने हाय ॥
खून में जीव सनी ॥ इन० ॥ १०
चोटी तिलक, जनेऊ तोड़े काटे राजकुमार।
निर्दोषी दीन दुखियों पर, चली खूब तलवार ॥
करी अति कटा छनी। इन० ॥ ११
अनगिनती कन्या अबलायें; लईं घरों में डार।

ज़बरन पकड़ पकड़ कर उनसे किया हाय व्यभिचार॥
दई पीड़ा दुगनी ॥ इन० ॥ १२
बिन गाली और गलौज के यह कभी न करते बात।
यह इनकी तहज़ीब; सभ्यता . दुनियां में विख्यात॥
है देखी और सुनी॥ इन० ॥ १३
हिन्दू बच्चे हाय! करोड़ों, कर डाले बेदीन।
मुसलमान करने के लिये; बहुत ले गये छीन॥
लड़ाई रही ठनी ॥ इन० ॥ १४
मन्दिर और मूर्ती तोड़ीं; लूटे सब श्रृङ्गार।
ज़री जवाहिर सभी ले गये, दीने कष्ट अपार॥
दुखी किये रङ्क धनी ।' इन० ॥ १५
मित्र नहीं होसकते हरगिज़; तज के निज मर्याद।
बैरी हैं सब हिन्दू धर्म के, रखना इसको याद॥
सभी 'शिया' 'सुन्नी' ॥ इन० ॥ १६
क़ब्रें पूजो तुम यवनों की; तुम्हें न आती शर्म।
मांस खाय लें माल तुम्हारा; करें अनेक कुकर्म॥
पापिनी तुम्हीं बनीं ॥ इन० ॥ १७
मियाँ मदार भूल मत पूजो, दो अब इनको छोड़।
शर्म्मा जलेसरी ने इनका भांडा दिया फोड़॥
जियो जागो रमनी ॥ इन० ॥ १८

भजन नं० ७४ (गारी)

कैसी बिगड़ चली हैं आज, सनातन हरे हरे; सनातन विधि सारी।। टेक ।

वर्ण आश्रम सिगरे बिगरे, भारत देश मँझार ।
डूबी नाव धर्म वैदिक की, कौन लगावै पार ।।
सोय रहे नर नारी ।। १ ।। कैसी०।।

भूँवर भयंकर यवन ईसाई, देत थपेड़ें मार ।
ताहू पै घनघोर घटायें, घुमड़ रही सरकार ।।
हरत गौ धन भारी ।। २ ।। कैसी०

भेद भाव तज निज निज स्वारथ. भर भर भाव उदार ।
कर्म धर्म अरु नियम संयम की, लेकर अब पतवार ।।
सजग हो बलधारी ।।३।। कैसी०

खेओ नाव पार पर डारो, तनक न करो अवार ।
भूले भटके मिले बन्धु जो, उनको लेउ उबार ।।
पंथ यह सुखकारी ।। ४ ।। कैसी०

ग्राम ग्राम अरु नगर नगर में, करिये धर्म प्रचार ।
यादराम अब आर्यवर्त का, कर लेउ बेगि सुधार ।।
जीव बनें उपकारी ।। ५ ।। कैसी०

भजन नं० ७५ (गारी)

कैसी अजब बनी ज्यौनार बड़ी ही हरे हरे, बड़ी हीं छवि छाई ॥ टेक

पंगति कैसी लगी अगारी, सोहति पत्तरि चौरी ।
तापै लड्डू खुरमा खस्ता, पूरी अधर कचौरी ॥
गुलाब जल अधिकाई ॥ १ ॥ कैसी०

पूड़ी बरफी खजला खुरचन, पेठा पेड़ा पूआ ।
चन्द्रकला अरु नानखताई, रसगुल्ला अरु हलुआ ॥
जलेबी रस साई ॥ २ ॥ कैसी०

बालूशाही और इमरती, घेवर गुजियां लौंज ।
कलाकंद कतरी गोला की, खाय रहे मन मौज ॥
खूब तेरी छुघराई ॥ ३ ॥ कैसी०

दही बूरो बूंदी को रायतो, रबड़ी लच्छेदार ।
सेव समोसे और कचरिया, टिकिया मोमनडार ॥
दिखावे चतुराई ॥ ४ ॥ कैसी०

सोंठ फिलौरी दही बड़े अरु साग मटर रसदार ।
घुइयाँ घीया और तुरइयाँ, केला अरु कचनार ॥
डार दई तुरसाई ॥ ५ ॥ कैसी०

नीबू अदरक आम मुरब्बा, परसे कई अचार।
'यादराम' जब पापर खाओ; आवे एक डकार॥
धन्य तेरी प्रभुताई॥ ६॥ कैसी०

भजन नं० ७६

लखो यह आर्य्य गृहों की होरी॥
सुख साधन सब साज सखीरी; क्या कारी क्या गोरी।
कोई समिधा कोई स्रुचक लीन्हे; कोइ भरे धूपलों झोरी॥
अधिक आनन्द मचोरी॥ लखहु ये आर्य्य०
ऋक् यजु साम अथर्व लिये; कोई केशर चन्दन रोरी।
सहपाठिनि सब हर्षित मन हैं, अपनी अपनी जोरी॥
चलीं सब गुरु आश्रम ओरी॥ लखहु यह०
अति उमङ्ग सब यूथ यूथ के, अँग अँग हर्ष भरोरी।
हँस हँस स्वरयुत वेद उचारत, इक दूसर प्रति ओरी॥
वार्षिक उत्साह रचोरी॥ लखहु०
नव बाला सब आर्य्य जनों की, गुरु आश्रम की पोरी।
लाल लाल मुख ब्रह्मचारिणी, गायन साम करोरी॥
पुरोहित आर्य्य कह्योरी। लखहु०

भजन नं० ७७

देखो आंख उघार होगई भारत की होली ॥
बल विद्या बुधि दीन हीन हैं गत विक्रम बलसारे।
दारिद जनित दरिद्र दुलारे ग्रह विपता के मारे ॥
भारती पुत्रों की टोली ॥ देखो०
बाल विवाह बाल लीला फल सब तन केसरि छाई।
घुटने पकड़ कराहि उठत हैं जीवन कला जलाई ॥
भाग्य श्री भारत हो रोली। देखो०
धर्म स्वदेश जाति हित जारे कुल की रीति लजाई।
अपनी, देस रीति सब छोड़ी परदेशी मन भाई ॥
पहनली अंगरेज़ी चोली। देखो०
नई रोशनी की रोली से सबकी आंख अघाई।
धर्माधर्म विचार छोड़ के धन की धूल उड़ाई ॥
भरी अपस्वारथ से झोली। देखो०
रसगुण विष अवगुण मिश्रित कर मद माजूम बनाई।
छल कर छुद्र छबीले छैलन छक छक खूब छकाई ॥
मत्त हो सब की मति खोली। देखो०
दिन दुपहर इनको नहिं सूझत ऐसी मति बौराई ॥
अब तो चेत करो मन मूरख काल राति नियराई ॥
निरी समझो न ठठोली। देखो ॥

भजन नं० ७८

मैं समझाऊं ओ मेरी लाडो सासू के घर जाना होगा।

मातःकाल उठ प्रभू भजन कर।
सबको शीश नवाना होगा ॥ १ ॥
सास ससुर की निश दिन सेवा।
सबका हुक्म बजाना होगा ॥ २ ॥
ननद जिठानी से प्रीति रखना।
पति ही पूज्य मानना होगा ॥ ३ ॥
देवर जेठ को उत्तर न दीजो।
सबका बोल निभाना होगा ॥ ४ ॥
घर के कामों में चतुराई।
अच्छे पाक बनाना होगा ॥ ५ ॥
पत्थर ईंट कभी मत पूजो।
सन्ध्या में चित्त लगाना होगा ॥ ६ ॥
एक ईश्वर की भक्ती करना।
पति से प्रेम बढ़ाना होगा ॥ ७ ॥
सब कामों से खाली होकर।
तन मन विद्या में लगाना होगा ॥ ८ ॥
दान मुकुन्द विद्या में देना।
सच्चा दान कमाना होगा ॥ ९ ॥

भजन नं० ७६

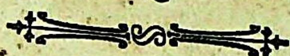
अरी बेटी तू मैके से सासुरे को जब विदा होगी ।
अकेली जायगी तू ही न बाबुल संग न मां होगी ॥
नई नगरी नई बखरी नई धरती नया अम्बर ।
नया दाना नया पानी नई वहां की हवा होगी ॥ २
नई सासू नए पीतम जिठानी नन्द दौरानी ।
न नैहर की वहां कोई बहन भावज बुआ होगी ॥ ३
वहां बीतेगी जो तुझ पर तुझे सब झेलनी होगी ।
पढ़ा सीखा जो कुछ यहां पर तेरे ग़म की दवा होगी ॥ ४
लड़ा वा लाड़की सासुर सुघड़ सासु भी होती है ।
करे सेवा तो ले मेवा न मां की मामता होगी ॥ ५
ससुर औ सासु की सेवा सुजन सत्कार पति आज्ञा ।
करे मानेगी भुगतेगी सिवा हां के न ना होगी ॥
जवाँ शीरी मुलकगीरी जवां टेढ़ी तो जग बाँका ।
बुरों को कर भला लेगी जो तुझ में शीलता होगी ॥
गृहस्थाचार सद्व्यवहार कुछ मर्याद का पालन ।
सभी से मिल के रहना है हुनर बिन बूझ क्या होगी ॥

भजन नं० ८०

कैसी शिक्षा दें माता हमारी।
बचपन से जहं देती सुन्दर सिखावन।
सोता पावें तकिया लगावें; मा सोवे यूं धोखा सिखावें; हा!
कैसी शिक्षा दें माता हमारी॥ १
जहं कहती बेटा पढ़ावेंगे तुमको क्यों?
वहं यूं सुनावें रण्डी बुलावें, नन्हीं बहू से ब्याह करावें; हा!
कैसी शिक्षा दें माता हमारी॥ २
महात्माओं के जीवन सुनाति जहं।
वहां कहानी, चुड़ैल मसानी; सुना किये डरपोक अज्ञानी, हा!
कैसी शिक्षा दें माता हमारी॥ ३
जहाँ कहतीं देखो बेटा चोरी न कीजो।
बच्चा किसी का उठा लाय पैसा, उसका मंगादे बर्फी पेड़ा, हा!
कैसी शिक्षा दें माता हमारी॥ ४
क्यों ना पढ़ाती हो तो दें ये उत्तर।
जो जीवेगा; तो पढ़ लेगा, उमर पड़ी है क्या है चिन्ता; हा!
कैसी शिक्षा दें माता हमारी॥ ५
पाठक कहैं बहनो अब भी सम्भलो।
यहीं तुम्हारे, प्राण अधारे, सुधर सकें हैं जबलों बारे; हा!
कैसी शिक्षा दें माता हयारी॥ ६

* ओ३म् *

महिला पुष्पांजली



जिसमें

कन्याओं तथा स्त्रियों के गाने योग्य उत्तम शिक्षाप्रद भजन ग़ज़ल आदि दर्ज हैं



संग्रहिता—

श्रीमती कलावतीदेवी

अध्यापका कन्या पाठशाला

रावतपाड़ा आगरा



प्रकाशक—

ज्वाला प्रसाद वर्म्मा

बुकसेलर, फुलट्टी बाज़ार,

आगरा



प्रथमवार] [मूल्य =)॥

* ओ३म् *

ईश स्तुति

ओं जय शङ्कर स्वामी, श्री जय शङ्कर स्वामी।
अविचल अन्तर्यामी, एक अपरिणामी ॥ ओं जय॰
मङ्गल मूल महत्ता, अतुलित श्रीमत्ता।
सत्य सनातन सत्ता, अजरामर अत्ता ॥ ओं जय॰
व्यापक विश्व विहारी, अव्यय अविकारी।
मुक्त महा बलधारी, जन शङ्कट हारी ॥ ओं जय॰
लोचन हीन निहारे, मुख बिन उच्चारे।
बिन मस्तिष्क विचारे, निर्गुण गुण धारे ॥ ओं जय॰
रच रच न्यारे न्यारे, भुवन भानु धारे।
तैजस पिंड पसारे, चमकें शशि तारे ॥ ओं जय॰
जल की तोत उड़ावे, बादल वर्षावे।
अन्नादिक उपजावे, जगदुन्नति पावे ॥ ओं जय॰
प्रकृति जीव को जोड़े, फिर उल्टे मोड़े।
आप मिलाप न छोड़े, नेक न त्रिक तोड़े ॥ ओं जय॰
अखिलाधार विधाता, सुख जीवन दाता।
मित्र बन्धु गुरु त्राता, परम पिता माता ॥ ओं जय॰
विरचे भोग अभोगी, सब के उपयोगी।
कर्म विपाक वियोगी, अनघ अनुद्योगी ॥ ओं जय॰

---

* ओ३म् *

महिला पुष्पाञ्जली



ईश्वर प्रार्थना

आओ वहनों गीत गायें, एक जगदाधार का ।
है जो पालन हार करता, सृष्टि का संहार का ॥ आ० १ ॥
देवतों का देवता वह, महादेव महा प्रभू ।
कर्म्म फल दाता विधाता, न्याय के दरबार का ॥ आ० २ ॥
दीन अवलाओं अनाथों, का ।निरक्षक है वही ।
पापियों को दण्ड देता, ठीक अत्याचार का ॥ आ० ३ ॥
भय नहीं जिसको किसी का, है नहीं जिसके विकार ।
पूर्ण, अविनाशी, प्रणेता, साम्य सद् व्यवहार का ॥ आ० ४ ॥
स्वेच्छा से ही प्रलय कर दे, वना दे विश्व को ।
काम पड़ता है नहीं, जिसको कभी औतार का ॥ आ० ५ ॥
शुद्ध-अजर, अनादि, अनुपम, अमर जिसमें शक्ति सव ।
सच्चिदानन्द स्वरूप, दयालु हद संसार का ॥ आ० ६ ॥
नित्य और पवित्र, सर्वेश्वर, सदाशिव, सन्त प्रिय ।
शंकरशरण का इष्ट भिक्षुक भक्त, जिसके प्यार का ॥ आ० ७ ॥

ईश्वर प्रार्थना भजन नं० २

हे दयामय हे प्रभू सद् बुद्धि हम को दीजिये ।
बालिका अवला समझ करके शरण में लीजिये ॥

आप के वर भक्ति से अपना हृदय मन्दिर भरें ।
शान्ति सुख का वास हम अपनी गृहस्थी में करें ॥
आत्मबल दो धैर्य्य दो हम सह सकें सब क्लेश को ।
प्रेम से धारण करें शुभ धर्म के उपदेश को ॥
शिक्षिता, साधवी, सुशीला, वीर नारी हम बनें ।
सीता, सावित्री, सती, कृष्णा कुमारी हम बनें ॥

प्रार्थना भजन नं० ३

लगी दिन रैन है चिन्ता कि अब उद्धार कैसे हो ।
पड़ी मझधार में भगवन् यह नैया पार कैसे हो ॥
चले आँधी निराशा की न सूझे अपना बेगाना ।
खिवैया चौकड़ी भूले प्रभू निस्तार कैसे हो ॥
नदी जीवन समर की है विजय उद्देश जिसका तट ।
पहुंच उस तक, अविद्या का यह हलका भार कैसे हो ॥
भयानक भ्रम भंवर में पड़ गई सब मान मर्यादा ।
हुये मदमत्त स्वार्थ में सुमति संचार कैसे हो ॥
सभी कर्त्तव्य बिसराये न निश्चय आत्म शक्ति पर ।
भला फिर सद् विचारों का अभय उद्धार कैसे हो ॥

गीत नं० ४

वहिन तुम सब से पहिले जागो ॥ टेक ॥

मुंह और हाथ धोय लो जल्दी, पति चरणन फिर लागो ।
घर दरवाज़ा झाड़ो नित ही, विधि से विस्तर टाँगो ॥
चौका वर्तन करो कराओ, नहा, मलिनता त्यागो ।
सन्ध्या अग्निहोत्र आदि कर, गृह कार्य्यों में लागो ॥
भोजन रचने से तुम पहिले, राय पति की मांगो ।
नियत समय सब काम करो री, अनरीतों से भागो ॥

गीत नं० ५

बहिन तुम मानो बात हमारी ॥ टेक ॥
करो सदा गुरु जन की सेवा, पढ़ लो विद्या प्यारी ।
चित्र कला सीना और बुनना, सीखो विविध प्रकारी ॥
व्यञ्जन और शिशू पालन विधि, बाल चिकित्सा न्यारी ।
काम काज व्यवहार सुहावन, पतिव्रत धर्म कथा री ॥
कहे "गुणाकर" यह सब बातें, हैं तुमको सुखकारी ॥

ग़ज़ल क़व्वाली नं० ६

पतिव्रत धर्म सर्वोत्तम, धार लो इस को महिलाओ ।
इसी का नित करो पालन, नहीं तुम और को ध्याओ ॥
नहीं मन्दिर में दर्शन को, नहीं शिवजी के पूजन को ।
नहीं गङ्ग, के न्हाने को, पति को छोड़ के जाओ ॥
पति निज ईश कर मानो, न जानो और सपने में ।
न गण्डे मन्त्र लेने को, न गुण्डों पास तुम जाओ ॥
पति जीवित व्रत्तादिक यह, सभी निष्फल हैं ऐ बहनो ।
मनू का है यही आज्ञा, कभी धोके में मत आओ ॥
अगर अन्धा तथा लंगड़ा, कुरूपा भी पति होवे ।
उसी को ईश-वत मानो, न ग्लानी चित्त में लाओ ॥
पढ़ो वृत्तान्त सीता का, पति के संग वन जाना ।
अधोगति क्या तुम्हारी है, तनिक मन में तो शर्माओ ॥
हरा सीता को जब रावण, धरा जा लङ्क के माँहीं ।
पतिव्रत धर्म नहीं छोड़ा, इसी का फेर फल पायो ॥
हुई गान्धारि सी नारी, वीर विदुषी वो थी भारी ।
पति निज प्राण कर माना, उन्हीं के मान तुम गाओ ॥

पढ़ो सत्शास्त्र हितकारी, कभी मत गाओ तुम गारी ।
सुधारो दीन भारत को, कुरीती त्यागती जाओ ॥
अगर अब भी न चेतोगी, तो निष्फल है हमारा श्रम ।
इसी 'शर्म्मा' की विनती को, श्रवण तक नेक पहुंचाओ ॥

होली (धुन काफ़ी) नं० ७

आओ सखी मिल खेलें होरी ॥ टेक ॥

कलह परस्पर द्वेष लड़ाई, निन्दा आदि तजो री ।
सब बहिनें आपस में मिलकर, श्यामल हो चाहे गोरी ॥
आज जिय खोल मिलो री ॥ आओ सखी० १ ॥
पतिव्रत का सुन्दर भूषण, रत्न जटित पहिनो री ।
लाज की साड़ी शील की चादर, पहिन ओढ़ निकलोरी ॥
मिलो सब बहियाँ जोरी ॥ आओ सखी० २ ॥
झूठ, असत्य व्योहार, कपट, छल सास ननँद से चोरी ।
यह जितने दुर्गुण हों तुम में, तिनहि बटोर बटोरी ॥
होलिका में भस्म करो री ॥ आओ सखी० ३ ॥
ज्ञान गुलाल उड़ाओ प्रेम रंग, सत्य के नीर में घोरी ।
मृदु वाणी पिचकारी मारो, सदाचार की रोरी ॥
मलो, मुख भर २ झोरी ॥ आओ सखी० ४ ॥
गीत कोई अश्लील न गाओ, नशा न कोई छुओ री ।
शुद्ध, पवित्र मनाओ होली, हिय आनन्द भरो री ॥
विनय बस है यह मोरी ॥ आओ सखी० ५ ॥

ग़ज़ल नं० ८

क्यों दीनबन्धु मुझ पै तेरी कुछ दया नहीं ।
आश्रित तेरी नहीं हूं कि तेरी प्रजा नहीं ॥

मेरे तो नाथ कोई तुम्हारे विना नहीं ।
माता नहीं है बन्धु नहीं है पिता नहीं ॥
माना कि मेरे पाप वहुत हैं बड़े प्रभु ।
कुछ उन से न्यूनतर तो तुम्हारी दया नहीं ॥
करुणा करोगे क्या मेरे आँसू ही देख कर ।
जी का भी मेरे दुःख तो तुम से छिपा नहीं ॥
क्यों मुझ को दुःख देते हैं लेते हैं मेरा शाप ।
लोगों का मैंने कुछ भी लिया और दिया नहीं ॥
तुम भी शरण न दोगे तो जाऊँगी हा ! कहां ।
अच्छी हूं या बुरी हूं किसी और की नहीं ॥

भजन नं० ६

दोहा—पहिले थीं इस देश में, सत्यवती प्रिय नार ।
सत्यवती सीता सती, भोगे कष्ट अपार ॥

पतिव्रत धर्म को जी, पालन किया नार सीता ने ॥ टेक ॥
दीनी आज्ञा रामचन्द्र को, वन की महतारी ने ।
उसी समय पति संग चली नहीं छोड़ा धर्म नारी ने ॥ १ ॥
देर न करी चली पति के संग, सीता पतिव्रता नारी ।
चौदह वर्ष पति संग, नंगे पावों फिरी बिचारी ॥ २ ॥
वन में मिला दुष्ट इक रावण, उसने उसे चुराया ।
विपिन मार्ग के बीच नारि सीता को त्रास दिखाया ॥ ३ ॥
पतिव्रता थी नारि सियानी पतिव्रत धर्म न छोड़ा ।
मरना तक मन्जूर किया नहीं धर्म से मुखड़ा मोड़ा ॥ ४ ॥
आज पतिव्रत धर्म का बहिनों नहीं तुमको ख़्याल ।
"रामचन्द्र" कहे चलो हमेशा सीता की सी चाल ॥ ५ ॥

भजन १०

पति को पूज लो री, है वह असली देव तुम्हारा ॥ टेक ॥
बाल अवस्था मात पिता ने पालन किया तुम्हारा।
तरुण अवस्था में पति मालिक असली देव तुम्हारा ॥ १ ॥
पाणि ग्रहण करा जब तुमने कीनी क्या प्रतिज्ञा।
उसी नियम पर चलना चाहिये मानो पति की आज्ञा ॥ २ ॥
सब से बड़ा देव पति जानो, इससे बड़ा न कोई।
उत्तम से उत्तम फल इस का धर्म पतिव्रत सोई ॥ ३ ॥
धर्म पतिव्रत को तुम अपने कभी न छोड़ो प्यारी।
सत्य धर्म पर चलो हमेशा पति की आज्ञाकारी ॥ ४ ॥
असली धर्म भजन के द्वारा दिया तुम्हें समझाई।
धर्म अर्थ के कारण करते "रामचन्द्र" कविताई ॥ ५ ॥

विवाह संस्कार के समय भजन ११

वचन दो सात जब हम को तभी प्रीतम कहाओगे।
करो इक़रार पश्चों में उसे पूरा निभाओगे ॥
पकड़ कर हाथ जो मेरा मुझे पत्नी बनाओगे।
तो किश्ती उम्र की मेरी किनारे पर लगाओगे ॥
हमारे वस्त्र भोजन की फ़िकर करनी तुम्हें होगी।
वचन, मन, कर्म से प्यारे मुझे अपना बनाओगे ॥
बिपत्ति सम्पत्ति औ बीमारी ग़मो शादी औ दुख सुख में।
कभी किसी हाल में मुझ से जुदा होने न पाओगे ॥
जवानी और बुढ़ापे में ख़िज़ां में और जीवन में।
निगाहे प्रेम से हर दम खुशी मुझ को दिलाओगे ॥
तिजारत, नौकरी, खेती, अर्थ और धर्म सम्बन्धी।
करो कोई काम जब जारी हमें पहले जताओगे ॥

जो बिगड़े काम कुछ मुझसे करो एकान्त में शिक्षा।
मगर नन्दी सहेलिन में न तुम हमसे रिसाओगे॥
हमें तज और त्रिया को दिया कभी दिल तो तुम जानों।
किये अपने को पाओगे, जो मेरा जी जलाओगे॥
अग्नि को साक्षी देकर जो अर्द्धांगिन किया मुझको।
तो फिर "वल्देव" बांये कर मुझे अपने विठाओगे॥

विवाह संस्कार के समय भजन १३

वचन देता हूं मैं तुम को तुम्हें प्यारी बनाऊंगा।
मगर मैं चन्द बातों का अहद तुमसे कराऊंगा॥
तुम्हें मैं धर्म की ख़ातिर जो अर्द्धांगिन बनाता हूं।
अहिद ताउम्र अपने से न पग पीछे हटाऊंगा॥
मगर तामील हुक्मों पर मेरे रहना कमरवस्ता।
हुई कुछ काम में ग़लती तो फिर नीचा दिखाऊंगा॥
सिवा मेरे जो कोई नर हो चाहे कितना ही वहतर।
जो की कभी ख़्वाब में ख़्वाहिश तो दिल तुमसे हटाऊंगा॥
गृहाश्रम के लिये तुमको किया संगिन व सहधर्मिन।
कठिन इस धर्म आश्रम को तेरे बिना कर न पाऊंगा॥
विपत्ति सम्पत्ति में तुम हर दम हमारे साथ में रहना।
गुज़ारा उसमें ही करना कि जो कुछ मैं कमाऊंगा॥
दग़ा राखो जो कुछ दिलमें तो अपने दिलकी तुमजानो।
मगर मैं धर्म से अपना वचन पूरा निभाऊंगा॥
वचन 'वल्देव' के इतने जो हों स्वीकार सत् चित् से।
तो फिर दिल जान से प्यारी तेरी ख़िदमत वजाऊंगा॥

भजन १३

तुम से वचन भराके पत्नी बनाऊंगा मैं।
जो जो करूं प्रतिज्ञा, पूरी निभाऊंगा मैं॥
पहली तो बात यह है सुनलो ऐ प्राण प्यारी।
गर हो पढ़ी तो अच्छा वरना पढ़ाऊंगा मैं॥
सच्चा तो व्रत यही है प्रण आज जो करोगी।
व्रत रह के भूखों मरना हरगिज़ न चाहूंगा मैं॥
अब तक पाखण्ड तुमने जोकुछ कियासो किया।
छुड़वा के पोप लीला आर्य बनाऊंगा मैं॥
जब जब मिलो किसीसे तब तब झुकाके सिरको।
कर जोड़ कर नमस्ते तुमसे कराऊंगा मैं॥
ईश्वर सिवा किसी की पूजा न करने दुंगा।
मीरा, मसान, क़बरें पूजन छुड़ाऊंगा मैं॥
तकलीफ़ में तुम्हारी, हरदम रहूंगा साथी।
लेकिन बुलाके स्याने, हरगिज़ न लाऊंगा मैं॥
माता पिता सम्बन्धी, भाई बहन कुटुम्बी।
कड़वा वचन किसी को, सुनने न पाऊंगा मैं॥
भारत की सारी नारी, मूरखा हुईं बेचारी।
उनका धर्म की शिक्षा तुमसे दिलाऊंगा मैं॥
माता पिता की सेवा, प्रीति से करनी होगी।
दीनों, पशू की रक्षा, तुमसे कराऊंगा मैं॥
सन्ध्या. हवन व पितृ, बलवैश्वदेव, अतिथि।
नित पञ्च यज्ञ करना, तुम को सिखाऊंगा मैं॥
मेले तमाशे तीरथ, संगीत नाच रंग में।
जो हैं कुरीति सारी, उनको हटाऊंगा मैं॥

भोजन व वस्त्र भूषण, तुमको मिलेंगे प्यारी।
लेकिन, फ़िज़ूल ख़र्ची, करना छुड़ाऊंगा मैं॥
अब 'वासुदेव' तुमने शिक्षा करी जो हमको।
जहाँ तक बनेगा मुझ से मानूं मनाऊंगा मैं॥

दादरा पूर्वी १४

पढ़ाय जाओ पुत्री होगा सुधार॥ टेक॥

पुत्री पढ़ैं हौ तौ धर्म कर्म हौ, होगा देश उद्धार॥१॥
विद्या विना कोई आदर न करिहैं, लूटैं लुटेरे हज़ार॥२॥
गण्डे तबीज़ और पण्डे पुजारी, मूर्खों को लूटैं चमार॥३॥
पढ़ी लिखी पति सेवा को जानें, हों ग़ैरों की दास गंवार॥४॥
सीता, सावित्री व सुलभा पढ़ी थीं, जीव ईश्वर करतीं विचार॥५॥
विद्या विहीना हों 'देवी' देश की, कैसे हो नैया यह पार॥६॥

(सती अनुसुइया का सीता जी को उपदेश)

ख़्याल १५

एक पतिव्रत धर्म सदा जो जानके साथ निभाती है।
वही सुहागिन वड़ भागिन, सतवन्ती नारि कहलाती है॥टेक॥

यही धर्म और व्रत नियम है पति पे जान निसार रहे।
तन मन से और वाणी से निज पति की तावेदार रहे॥
दुख सुख में और भले बुरे में पति की आज्ञाकार रहे।
परमेश्वर सम समझ पति को चरणों पर बलिहार रहे॥
त्याग पति का ध्यान, ग़ैर का सुपने में नहीं लाती है।
वही सुहागिन वड़ भागिन सतवन्ती नारि कहलाती है॥१॥

वृद्धा, रोगी, मूर्ख, निर्धनी, अन्धा, बहरा अज्ञानी।
महा आलसी, मूढ़, क्रोधी। किसी अङ्ग में हो हानी॥

ऐसे पति की भी रहे दासी, वही स्त्री लासानी।
करे निरादर कभी न इसका कहे ना कभी कटु बानी॥
जो बोले दुरवचन पति को, घोर नर्क में जाती है।
वही सुहागिन बड़ भागिन, सतवन्ती नारि कहलाती है॥२॥
अधिक सनेही शुभचिन्तक हितकारी पिता व माता हैं।
और सम्बन्धी दुनियाँ के जो भगनी और भ्राता हैं॥
हैं सुखदायक सभी परन्तु किंचित सुख के दाता हैं।
मगर पति इस लोक और परलोक के भी परित्राता हैं॥
स्वप्न, जाग्रत हर हालत में पति को नहीं भुलाती है।
वही सुहागिन बड़ भागिन सतवन्ती नारि कहलाती है॥
पति के चरणों से बढ़ कर कोई तीर्थ स्थान नहीं।
मिथ्या तीर्थ व्रत करे जो उस जैसा नादान नहीं॥
पतिव्रत की महिमा को वर्णन करना आसान नहीं।
और कहूं क्या अधिक तेरे से तू कोई अंजान नहीं॥
मिथ्या व्रत करे जो नारी पति की उम्र घटाती है।
वही सुहागिन बड़ भागिन सतवन्ती नारि कहलाती है॥४॥

ग़ज़ल १६

भारत दुलारियो तुम सुन लो विनय हमारी।
मन में तनिक तो सोचो क्या है दशा तुम्हारी॥
शुभ कर्म धर्म त्यागे विद्या न कुछ पढ़ी हो।
फंस मूर्खता में तुम तो खोती हो आयु सारी॥
बाली उमर में चाहो बच्चों का ब्याह गौना।
गुरुकुल न पढ़ने भेजो कैसी अनीति धारी॥
पति से न प्रीति रखना समझो हो धर्म अपना।
पूजो मियाँ मसानी बुद्धी गई है मारी॥

गा गा के भ्रष्ट गाली सब तुम ने लाज खोई।
यह दुर्दशा है बहिनो विद्या विना तुम्हारी॥
था एक दिन तुम्हारा शुभ नाम लक्ष्मी जी।
शूद्रा व जूती पग की जाती हो अब पुकारी॥
अब तो किया न जाता आदर कहीं तुम्हारा।
हो लो सचेत फिर भी जिससे हो दूर ख़्वारी॥
लीलावती, अहिल्या, विद्याधरी व सीता।
देखो तो उन का कैसा अब तक है नाम जारी॥
हो फिर भी नाम रौशन त्यागो अगर अविद्या।
'मुरली' कहे रहोगी बहिनो सदा सुखारी॥

ग़ज़ल १७

पति देव ही गुरू है और पूज्य नारियों का।
पहिले इसे मना कर औरों को फिर मनाना॥
बढ़ कर है इस की पूजा मन्दिर के देवता से।
नहीं पूज्य नारियों का जग में पति समाना॥
अपमान घरके शिव का मन्दिर के शिव की पूजा।
सुपने में भी प्यारी ऐसा ग़ज़ब न ढाना॥
गर धर्म है तो यह है गर नियम है तो यह है।
भक्ति के फूल पति के चरणों ही में चढ़ाना॥
पति प्रेम ही है जीवन, पति द्वेष ही है मृत्यु।
खुश हो पति तो फिर क्या रूठे अगर ज़माना॥
बस आख़िरी नसीहत मेरी यही है तुम से।
नित उठके अपने पति के चरणों में सिर झुकाना॥

भजन १८

लीला तेरी किसी से लखी न जाये।
तू पारब्रह्म पूरण अविनाशी घट २ रह्यो समाये।
रूप रेख से है तू न्यारा, जन्म मरण से किया किनारा।
रवि शशि और उड़ गड़ तारा कैसे दियो रचा॥
तू दयाल हम वेमुख सारे, आन पड़े हैं तेरे द्वारे।
खन्नादास जैसे विचारे लीजो शरण लिपटा लीला तेरी०॥

भजन १९

धर्म की डूबती नय्या को तराने वाले।
दुख के सागर से हमें पार लगाने वाले॥
चन्द्र ग्रह तारे रचे और सृष्टी अद्भुत।
नाना प्रकार के फल फूल उगाने वाले॥
पंच तत्व काल ऋतु और प्रमाण भानू।
सर्व को अटल नयम में हो चलाने वाले॥
रूप रस गंध विकारों से हो बाहर स्वामी।
नाड़ी नस आदि के बन्धन में न आने वाले॥
राग द्वेश और अविद्या के कलेशों से परे।
ऐसे सगुण हो कि निर्गुण भी कहाने वाले॥
तिमर अज्ञान में पड़ हमको कहाँ थी सुधबुध।
सत्य उपदेश के डंके से जगाने वाले॥
आज्ञा पालन में तेरी रहते सदा हैं जो जन।
भक्त वत्सल हो उन्हें मोक्ष दिलाने वाले॥
तेरी भक्ती की लगन जिनको लगी है ईश्वर।
उनके आनन्द को, हिम्मत को बढ़ाने वाले॥

शरणागत छोड़ तेरी और कहां हम जायें।
सर्व आधार हो गिरतों को उठाने वाले॥
तुच्छ बुद्धी है गंगाराम करे क्या वर्णन।
अकथ अगोचर हो हर जापे समाने वाले॥

भजन २०

तुम हो प्रभु चांद मैं हूं चकोरा।
तुम हो कमल फूल मैं हूं रस का भौंरा॥
ज्योती तुम्हारी का मैं हूं पतंगा।
आनन्द घन तुम हो मैं वन का भौंरा॥
जैसे है लोहे की चम्वक से प्रीती।
आकर्शण करे मोहे लगा तार तेरा॥
पानी विना जैसे हो मीन व्याकुल।
ऐसा ही तड़पाय तोरा विछोड़ा॥
एक बूंद जल का मैं प्यासा हूं चातक।
अमृत की करो वर्षा हरो दुख मोरा॥

भजन २१

तू परिपूरण नाथ जगत का महिमा तेरी अपरमपार।
जगत पिता तुम सब से महां हो कहते चारों वेद पुकार॥
पृथ्वी सूर्य चन्द्र तारा तेरी ही सब है विस्तार।
निश दिन करता दान पदारथ तू सब को नाना प्रकार॥
इस मन को ज्ञान दे तेरे चरणों में लगे।
पापों से यह हटे-तेरे नाम को रटे॥
अस्तय को त्याग दे सत्य को धारण करे।
खन्ना तुझ पर रहे सदा ही जां निसार॥

भजन २२

तुम हो पिता हमारे हो वेद ज्ञान वाले।
जग में भी रम रहे हो हो वे निशान वाले॥
छिन छिन तुझे ही ध्याऊं हे न्यायकारी स्वामिन।
ज्योती तेरी चमकती हो चन्द्र भानु वाले॥
दुःखों से तू छुड़ादे हमतो हैं तेरे सेवक।
सिखलादे अपनी भक्ती आनन्द खान वाले॥
पाठक के तुम हो सर्वस है दीन बन्धु स्वामिन।
आवागमन छुड़ादे हो मोक्ष दान वाले॥

भजन २३

जगदीश तुम्हारा सहारा हमें।
यहां सूझे न कोई हमारा हमें॥
बालकपन से आज तलक प्रभू।
तुम्हीं ने तो सम्हारा हमें॥
ढूंढ फिरे हम सर्व दिशा में।
मिला न तुम सा प्यारा हमें॥
चाहत सुख में एक मोक्ष पद।
बस चाहिए तुम्हारा आधार हमें॥
प्राकृति विन्य करत है अति ही।
चका चौंध अन्धारा हमें॥
सो इनसे प्रभू शीघ्र उबारो।
निज ज्ञान का दो उजयारा हमें॥
भवसागर की लहर कठिन है।
इनसें दो छुटकारा हमें॥

शक्ती हीन हम निर्बल दुरवल।
गहत न बने किनारा हमें॥
मूरखपने सों अरे प्रभू जी।
आवे न सुध वारम्वारा हमें॥
आर्य्य पुरोहित गहो हार्दिक।
कीजे न स्वामी न्यारा हमें॥

भजन २४

कीजे दया की दृष्टी करुणा निधान ईश्वर।
तू ही है दीन बन्धू हम दीन अजान ईश्वर॥
वेदों से हैं विमुख हम सत संग हमने छोड़ा।
और पाप जग में आकर कीने महान ईश्वर॥
झूठे सुखों में फंस कर वृथा में आयु खोई।
दुक्खों के बीज बोये इस जग में आन ईश्वर॥
अज्ञान में फंसे हम तुमको पिता भुलाया।
भक्ती पिता जी अपनी हमें कर प्रदान ईश्वर॥
भिक्षुक हैं तेरे दर के यही दान मांगती हैं।
बल विद्या और बुद्धी हमें कर प्रदान ईश्वर॥
तू ही अजर अमर है जग में रमा हुआ है।
अद्भुत है तेरी रचना करें वेद गान ईश्वर॥
यह गुप्त दास तेरे चरणन में आ गिरा है।
जैसा बुरा या अच्छा करे तेरा ध्यान ईश्वर॥

भजन २५

तेरी सत्ता के बिना हे प्रभु मंगल मूल
पत्ता भी हिलता नहीं खिले न कोई फूल
जिनमें तेरा नहीं विकास ऐसा कोई फूल नहीं है
मैंने देख लिया सब ठौर तुझसा मालिक मिले न और

भजन ३०

जीवन आधार घट २ अन्तर्यामी ॥
तुम सृष्टी के पालक हो-दुष्टों के कुल घालक हो।
दुख के मोचनहार ॥ घट २ ॥
करुणामय नाम तिहारो-दीनन को देउ सहारो।
दयानिधि परम उदार ॥ घट २ ॥
हम अबला निपट गंवारी ! क्या महिमा गांय तुम्हारी।
न कोई पावे पार ॥ घट २ ॥
करुणानिधि करुणा कीजे—हम अबलन पर बल दीजे
मिलें जाते फल चार ॥ घट २ ॥
हम करें तुम्हारी पूजा-नहिं मानें तुम विन दूजा।
बुद्धि यह देउ कर्त्तार ॥ घट २ ॥
मन उपजे ज्ञान हमारे—जो रहें आधीन तुम्हारे।
विनय यह बारम्बार ॥ घट २ ॥
तुम जब से नाथ विसारे-मन हो गये मलिन हमारे।
प्रभु अब लेउ उबार ॥ घट २ ॥
कर दुर्गुण दूर हमारे—"मुरली की नाव किनारे।
लगाओ जगदाधार ॥ घट २ ॥

भजन ३१

पति बिन सूनो सभी संसार ॥ पति ॥
१-पति ही प्राण पती जग जीवन पति ही है भरतार ॥ पति ॥
२-पति ही से पति है निज तन की पति पन राखनहार ॥ पति ॥
३-जब तक पति है तब तक पति है बिन पति विपति हजार ॥प०
४-पति ही तप है पति ही व्रत है पति ही है करतार ॥ पति ॥
५-जाको प्रेम चरण पति लागो धन्य २ वही नार ॥ पति ॥

शक्ती हीन हम निर्बल दुरबल।
गहत न बने किनारा हमें॥
मूरखपने सों अरे प्रभू जी।
आवे न सुध बारम्बारा हमें॥
आर्य्य पुरोहित गहो हार्दिक।
कीजे न स्वामी न्यारा हमें॥

भजन २४

कीजे दया की दृष्टी करुणा निधान ईश्वर।
तू ही है दीन बन्धु हम दीन अजान ईश्वर॥
वेदों से हैं विमुख हम सत संग हमने छोड़ा।
और पाप जग में आकर कीने महान ईश्वर॥
झूठे सुखों में फंस कर वृथा में आयु खोई।
दुक्खों के बीज बोये इस जग में आन ईश्वर॥
अज्ञान में फंसे हम तुमको पिता भुलाया।
भक्ती पिता जी अपनी हमें कर प्रदान ईश्वर॥
भिक्षुक हैं तेरे दर के यही दान मांगती हैं।
बल विद्या और बुद्धी हमें कर प्रदान ईश्वर॥
तू ही अजर अमर है जग में रमा हुआ है।
अद्भुत है तेरी रचना करें वेद गान ईश्वर॥
यह गुप्त दास तेरे चरणन में आ गिरा है।
जैसा बुरा याअच्छा करे तेरा ध्यान ईश्वर॥

भजन २५

तेरी सत्ता के बिना हे प्रभु मंगल मूल
पत्ता भी हिलता नहीं खिले न कोई फूल
जिनमें तेरा नहीं विकास ऐसा कोई फूल नहीं है
मैंने देख लिया सब ठौर तुझसा मालिक मिले न और

भजन ३०

जीवन आधार घट २ अन्तर्यामी ॥
तुम सृष्टी के पालक हो-दुष्टों के कुल घालक हो।
दुख के मोचनहार ॥ घट २ ॥
करुणामय नाम तिहारो-दीनन को देउ सहारो।
दयानिधि परम उदार ॥ घट २ ॥
हम अवला निपट गंवारी ! कया महिमा गांय तुम्हारी।
न कोई पावे पार ॥ घट २ ॥
करुणानिधि करुणा कीजे—हम अवलन पर वल दीजे
मिलें जाते फल चार ॥ घट २ ॥
हम करें तुम्हारी पूजा-नहिं मानें तुम विन दूजा।
बुद्धि यह देउ कर्त्तार ॥ घट २ ॥
मन उपजे ज्ञान हमारे—जो रहें आधीन तुम्हारे।
विनय यह वारम्वार ॥ घट २ ॥
तुम जब से नाथ विसारे-मन हो गये मलिन हमारे।
प्रभु अव लेउ उवार ॥ घट २ ॥
कर दुर्गुण दूर हमारे—"मुरली की नाव किनारे।
लगाओ जगदाधार ॥ घट २ ॥

भजन ३१

पति बिन सूनो सभी संसार ॥ पति ॥
१-पति ही प्राण पती जग जीवन पति ही है भरतार ॥ पति ॥
२-पति ही से पति है निज तन की पति पन राखनहार ॥ पति ॥
३-जव तक पति है तब तक पति है विन पति विपति हजार ॥प०
४-पति ही तप है पति ही वृत है पति ही है करतार ॥ पति ॥
५-जाको प्रेम चरण पति लागो धन्य २ वही नार ॥ पति ॥

६-एक पतीवृत रहे सर्वदा और वृत निःसार ॥ पति ॥
७-विन पति वृत राखे स्त्री का जीवन है धिक्कार ॥ पति ॥

रसिया ३२

है पतिव्रत धर्म तुम्हारौ बहिनो क्यों हाय बिसारो ॥ टेक ॥
रावण ने सीता माता का धर्म डिगाना चाहा था ।
नाश कर दिया उस पापी का नहीं निज धर्म डिगाया था ॥
लंका में रह धर्म बचाया कहनो कियो भारो ॥ १ ॥
दमयंती ने नल राजा का विपत्ति में साथ निभाय दिया ।
वन २ डोली दुःख सहा अपना करतव्य दिखाय दिया ॥
धृतराष्ट्र राजा पर गांधारी अपना तन मन वारो ॥ २ ॥
विद्योतमा ने अपने पती संग क्या कर्तव्य दिखाय दिया ।
धोखे से मिले विना पढ़े फिर अपने आप पढ़ाय दिया ॥
कवि रत्न कालीदास बने यह है प्रताप तुम्हारो ॥ ३ ॥
दहली वाला बादशाह चढ़ चित्तौड़गढ़ पर आया था ।
पद्मावती को छीन लेउ यह बेजा दुन्द मचाया था ॥
धोखा देकर राजा रत्न को अपनी क़ैद में डारो ॥ ४ ॥
पतिवृता ने अपने पती को कैद से तुरत छुड़ाय लिया ।
चौदह सौ ले जवान संग में फ़ौज में दुन्द मचाय दिया ॥
तोड़ हथकड़ी चढ़ घोड़े पर पती को साफ निकारो ॥ ५ ॥
दहली न जाऊं बादशाह के चंचल कुमरि ने ठान लिया ।
कृष्णा कुमारी मरी ज़हर खा यह दिल अन्दर ठान लिया ॥
हिन्दू प्रतापसिंहजी राणा वह है पती हमारो ॥ ६ ॥
ख़त लिख भेजा महाराज को चंचल चरण की चेरी है ।
मुसलमान मोहि ब्याह ले जावे राखो लाज आ मेरी है ॥
मैं पति कर चुकी आपको राखो धर्म हमारो ॥ ७ ॥
अनाथ सेवक गोविन्दसिंह बहिनो यह भजन बनाता है ।

मूर्खता ने हम को अति नाथ सताया।
जिसके कारण हमने तुमको बिसराया॥
भई मलिन बुद्धि अज्ञान हृदय में छाया।
करुणा निधान भगवान करो अब दाया॥
हम अबलन हू की नाथ ख़बर अब लीजे। अब०॥
हे जगत् पिता सर्वज्ञ सकल सुख कारी॥
नहिं तुम सम कोऊ दीनन को हित कारी।
हो तुम्हीं हमारे मात पिता महतारी॥
है सब विधि आशा हमको नाथ तिहारी।
मुरली के मन को भक्ती अपनी दीजे॥ अब०॥

भजन प्रभाती ३७

करैं विनती भारत नारी—सुनो प्रभु दीनन के हितकारी॥
काम क्रोध मद मोह लोभ ने हम पर विपता डारी।
बेगि निवारि इन्हें करुणा निधि हमको लेउ उबारी॥ सुनो॥
छाय रही चहुं ओर अविद्या की रजनी अंधियारी।
सूझत नाहिं धरम को मारग है चित निपट दुखारी॥ सुनो॥
फूट की फ़ौज चढ़ी चहुं दिशि से भारत द्वेष कटारी।
मेळ मिलाप कितहुं नहिं पावत जित देखहु तित रारी॥ सुनो॥
मुरली टारि अविद्या करि देउ निर्मल बुद्धि हमारी।
सब विधि नाथ भरोसा तिहारो टारहु संकट भारी॥

गजल ३८

सखी अब सभ्यता सीखो तुम्हें ससुरे को जाना है।
बिना गुण ढंग के सीखे नहीं वहां पर ठिकाना है॥ सखी॥
भरोसे यहां के मत रहना नये २ ढंग हैं वहां के।
चलन व्यवहार मैके का न कुछ वहां काम आना है॥

६-एक पतीव्रत रहे सर्वदा और व्रत निःसार ॥ पति ॥
७-बिन पति व्रत राखे स्त्री का जीवन है धिक्कार ॥ पति ॥

रसिया ३२

है पतिव्रत धर्म तुम्हारौ बहिनो क्यों हाय विसारो ॥ टेक ॥
रावण ने सीता माता का धर्म डिगाना चाहा था ।
नाश कर दिया उस पापी का नहीं निज धर्म डिगाया था ॥
लंका में रह धर्म बचाया कहनो कियो भारो ॥ १ ॥
दमयंती ने नल राजा का विपत्ति में साथ निभाय दिया ।
वन २ डोली दुःख सहा अपना करतव्य दिखाय दिया ॥
धृतराष्ट्र राजा पर गांधारी अपना तन मन वारो ॥ २ ॥
विद्योतमा ने अपने पती संग क्या कर्तव्य दिखाय दिया ।
धोखे से मिले बिना पढ़े फिर अपने आप पढ़ाय दिया ॥
कवि रत्न कालीदास बने यह है प्रताप तुम्हारो ॥ ३ ॥
दहली वाला बादशाह चढ़ चित्तौड़गढ़ पर आया था ।
पद्मावती को छीन लेउ यह बेजा दुन्द मचाया था ॥
धोखा देकर राजा रत्न को अपनी कैद में डारो ॥ ४ ॥
पतिव्रता ने अपने पती को कैद से तुरत छुड़ाय लिया ।
चौदह सौ ले जवान संग में फौज में दुन्द मचाय दिया ॥
तोड़ हथकड़ी चढ़ घोड़े पर पती को साफ निकारो ॥ ५ ॥
दहली न जाऊं बादशाह के चंचल कुमरि ने ठान लिया ।
कृष्णा कुमारी मरी ज़हर खा यह दिल अन्दर ठान लिया ॥
हिन्दू प्रतापसिंहजी राणा वह है पती हमारो ॥ ६ ॥
खत लिख भेजा महाराज को चंचल चरण की चेरी है ।
मुसलमान मोहि ब्याह ले जावे राखो लाज आ मेरी है ॥
मैं पति कर चुकी आपको राखो धर्म हमारो ॥ ७ ॥
अनाथ सेवक गोविन्दसिंह बहिनो यह भजन बनाता है ।

मूर्खता ने हम को अति नाथ सताया।
जिसके कारण हमने तुमको बिसराया॥
भई मलिन बुद्धि अज्ञान हृदय में छाया।
करुणा निधान भगवान करो अब दाया॥
हम अबलन हू की नाथ ख़बर अब लीजे। अब०॥
हे जगत् पिता सर्वज्ञ सकल सुख कारी॥
नहिं तुम सम कोऊ दीनन को हित कारी।
हो तुम्हीं हमारे मात पिता महतारी॥
है सब विधि आशा हमको नाथ तिहारी।
मुरली के मन को भक्ती अपनी दीजे॥ अब०॥

भजन प्रभाती ३७

करें विनती भारत नारी–सुनो प्रभु दीनन के हितकारी॥
काम क्रोध मद मोह लोभ ने हम पर विपता डारी।
वेगि निवारि इन्हें करुणा निधि हमको लेउ उबारी॥ सुनो॥
छाय रही चहुं ओर अविद्या की रजनी अंधियारी।
सूझत नाहिं धरम को मारग है चित निपट दुखारी॥ सुनो॥
फूट की फ़ौज चढ़ी चहुं दिशि से मारत द्वेष कटारी।
मेळ मिलाप कितहुं नहिं पावत जित देखहु तित रारी॥ सुनो॥
मुरली टारि अविद्या करि देउ निर्मल बुद्धि हमारी।
सब विधि नाथ भरोसा तिहारो टारहु संकट भारी॥

गजल ३८

सखी अब सभ्यता सीखो तुम्हें ससुरे को जाना है।
विना गुण ढंग के सीखे नहीं वहां पर ठिकाना है॥ सखी॥
भरोसे यहां के मत रहना नये २ ढंग हैं वहां के।
चलन व्यवहार मैके का न कुछ वहां काम आना है॥

नई सासू नई सखियां जिठानी ननद द्योरानी।
नई नगरी नई बखरी नया ही आब दाना है॥
रस्म और रीति सब नई २ नई वहां की अमलदारी।
नये २ प्यार वो लज़्ज़त नये प्रीतम से पाना है॥
यहां के माई औ बाबुल बहिन भावज न वहां होंगे।
वहां करतूत अपनी से हितू सबको बनाना है॥
ज़रा भी होगई ग़लती व ग़फलत काम अपने में।
तो फिर शरमिन्दगी झिड़की तुम्हें हर वक्त पाना है॥
वहां दरकार है तुम को मिलन सारी व हुशियारी।
अक़्लमंदी व फुर्ती से हुक्म सबका बजाना है॥
ससुर और सास प्रीतम के हमेशा मातहत रहना।
दिया इन्हें भूल कर उत्तर तो फिर ज़िल्लत उठाना है॥
बचन मीठा व आधीनी रहो साबित क़दम सत पर।
हुई जो भूल कुछ इसमें तो सब अपना बिगाना है॥
कपट छल ईर्षा निंदा बुराई दूर कर दिल से।
बचन बलदेव के मानो यही सुख का ख़ज़ाना है॥

गजल ३६

अरी बेटी तू मैके से सासुरे जब बिदा होगी।
अकेली जायगी तू ही न बाबुल संग मा होगी॥
नई नगरी नई बखरी नई धरती नया अम्बर।
नया दाना नया पानी नई वहां की हवा होगी॥
नई सासू नये प्रीतम जिठानी नन्द द्योरानी।
न नैहर की वहां कोई बहिन भावज बुआ होगी॥
वहां बीतेगी जो तुझ पर तुझे सब झेलनी होगी।
पढ़ा सीखा जो कुछ यहां पर तेरे ग़म की दवा होगी॥

जो खैर अपनी चाहै, दें पास भेज उनके।
चेरी मैं 'इन्द्र' उन्हीं, कृपा निधान की हूं ॥ ७ ॥

परदेश में सावधान
ग़ज़ल ४३

परदेश में स्वजन का, यदि साथ छूट जाये।
कहना कि आर्य मन्दिर, कोई हमें बताये ॥ १ ॥
दो एक बार सुनना, फिर दूसरों से कहना।
दुर शब्द कोई तुमको, यदि मार्ग में सुनाये ॥ २ ॥
खाना न हर किसी का, परदेश में कहीं तुम।
कुछ वस्तु सूंघना मत, कोई तुम्हें सुंघाये ॥ ३ ॥
भीड़ों में तुम न चलना, एकान्त में न जाना।
सुनना नहीं किसी की, कोई तुम्हें बुलाये ॥ ४ ॥
करना न तुम सवारी, पैदल की राह चलना।
जब तक समाज मन्दिर, मिल आपको न जाये ॥ ५ ॥
'शंकरशरण' कहें तुम, निज वस्तु पास रखना।
यह शब्द याद कर के, परदेश पग उठाये ॥ ६ ॥

हमारे यहां देवियां संग्राम करती थीं, परदा कैसा ?
शैरदार दादरा ४४

बहनों पर्दे का चलन हटाया करो ॥ टेक ॥
यहां की वीर बेटियां समर में लड़ती थीं।
महान् पण्डितों से शास्त्रार्थ करती थीं ॥
इतिहासों में ध्यान लगाया करो ॥ बहनों० ॥
प्रताप पुत्र की कन्या ने जां बचाई थी।
नील देवी ने महा वीरता दिखाई थी ॥
पापी गुण्डों से धर्म बचाया करो ॥ बहनों० ॥

नई सासू नई सखियां जिठानी ननद द्योरानी।
नई नगरी नई बखरी नया ही आब दाना है॥
रस्म और रीति सब नई २ नई वहां की अमलदारी।
नये २ प्यार वो लज्जत नये प्रीतम से पाना है॥
यहां के माई औ बाबुल बहिन भावज न वहां होंगे।
वहां करतूत अपनी से हितू सबको बनाना है॥
ज़रा भी होगई ग़लती व ग़फलत काम अपने में।
तो फिर शरमिन्दगी झिड़की तुम्हें हर वक्त पाना है॥
वहां दरकार है तुम को मिलन सारी व हुशियारी।
अक़लमंदी व फुर्ती से हुक्म सबका बजाना है॥
ससुर और सास प्रीतम के हमेशा मातहत रहना।
दिया इन्हें भूलकर उत्तर तो फिर ज़िल्लत उठाना है॥
बचन मीठा व आधीनी रहो साबित क़दम सत पर।
हुई जो भूल कुछ इसमें तो सब अपना बिगाना है॥
कपट छल ईर्शा निदां बुराई दूर कर दिल से।
बचन बलदेव के मानो यही सुख का ख़ज़ाना है॥

गजल ३९

अरी बेटी तू मैके से सासुरे जब बिदा होगी।
अकेली जायगी तू ही न बाबुल संग मा होगी॥
नई नगरी नई बखरी नई धरती नया अम्बर।
नया दाना नया पानी नई वहां की हवा होगी॥
नई सासू नये प्रीतम जिठानी नन्द द्योरानी।
न नैहर की वहां कोई बहिन भावज बुआ होगी॥
वहां बीतेगी जो तुझ पर तुझे सब झेलनी होगी।
पढ़ा सीखा जो कुछ यहां पर तेरे ग़म की दवा होगी॥

जो खैर अपनी चाहै, दे पास भेज उनके।
चेरी मैं 'इन्द्र' उन्हीं, कृपा निधान की हूं ॥ ७ ॥

परदेश में सावधान
ग़ज़ल ४३

परदेश में स्वजन का, यदि साथ छूट जाये।
कहना कि आर्य मन्दिर, कोई हमें बताये ॥ १ ॥
दो एक बार सुनना, फिर दूसरों से कहना।
दुर शब्द कोई तुमको, यदि मार्ग में सुनाये ॥ २ ॥
खाना न हर किसी का, परदेश में कहीं तुम।
कुछ वस्तु सूंघना मत, कोई तुम्हें सुंघाये ॥ ३ ॥
भीड़ों में तुम न चलना, एकान्त में न जाना।
सुनना नहीं किसी की, कोई तुम्हें बुलाये ॥ ४ ॥
करना न तुम सवारी, पैदल की राह चलना।
जब तक समाज मन्दिर, मिल आपको न जाये ॥ ५ ॥
'शंकरशरण' कहे तुम, निज वस्तु पास रखना।
यह शब्द याद कर के, परदेश पग उठाये ॥ ६ ॥

हमारे यहां देवियां संग्राम करती थीं, परदा कैसा ?
शेरदार दादरा ४४

बहनों पर्दे का चलन हटाया करो ॥ टेक ॥
यहां की वीर बेटियां समर में लड़ती थीं।
महान् पण्डितों से शास्त्रार्थ करती थीं ॥
इतिहासों में ध्यान लगाया करो ॥ बहनों० ॥
प्रताप पुत्र की कन्या ने जां बचाई थी।
नील देवी ने महा वीरता दिखाई थी ॥
पापी गुण्डों से धर्म बचाया करो ॥ बहनों० ॥

मिश्र मंडन की नारि शास्त्रार्थ करती थी।
प्रमाण बात बात में निकाल धरती थी॥
वेद ले कर के मैदां में आया करो॥ वहनों॥
केकई साथ में दशरथ के गई थी रण को॥
देखो सीता को साथ नाथ के गई वन को॥
यहां परदा नहीं था बताया करो॥ बहनों॥
इसी तरह की सुता होगई असंख्य यहां।
'शरण' इस भांति की नादान अब रहती हैं जहाँ॥
पशू वन के न जीवन बिताया करो॥ वहनों॥
जिन मुसलमानों ने पर्दा यहाँ चलाया है।
बुरा पर्दे को उन्होंने भी अब बताया है॥
बहनों व्यर्थ में मत शरमाया करो॥ वहनों॥

भजन प्रकाश ४५

नेक कमाई कर कुछ जग में जीवन सफल बनाओ री।
उत्तम अवसर प्राप्त हुआ है वृथा न इसे गंवाओ री॥
द्रुतगामी अति चंचल मन पर निज आँतक जमाओ री।
वशीभूत हो विषयों के मत दारुण दुःख उठाओ री॥
पर सुख ही में निज सुख समझो पर दुख में दुख पाओ री।
सपने में भी कभी किसी का मत तुम बुरा मनाओ री॥
प्रेम प्रीति आपस में रखिये वैर विवाद मिटाओ री।
आश्रय हीन अनाथों के प्रति दयाभाव दरसाओ री॥
करो सदा पुरुषार्थ असुर आलस को मार भगाओ री।
सत्य आचरण की नौका पर चढ़ि भव से तरजाओ री॥
भूले भटके भ्रातृगणों को सत्मारग पर लाओ री।
पावन वैदिक धर्म पताका देश देश फहराओ री॥

इस मूर्खता से हो गई अत्यन्त दुर्दशा।
पैरों की जूती अब तो कहाओगी कब तलक॥
भोली समझ के तुमको हैं बहकाते पोप जी।
फन्दे में फंसके धन को लुटाओगी कब तलक॥
ईश्वर की एक पूजा छोड़ कर के देवियो।
पत्थर क़बर को शीश झुकाओगी कब तलक॥
ऋषिवर ने तुम्हें आके जगाया "सरस्वती"
उस योगीके तुम गुणको न गाओगी कबतलक॥

आरती ५०

ओ३म् जय जगदीश हरे, पिता जय जगदीश हरे।
भक्त जनन के संकट क्षण में दूर करे॥ ओ३म् जय०
जो ध्यावे फल पावे दुख विनशे मन का।
सुख सम्पति घर आवे कष्ट मिटे तन का॥ ओ३म् जय०
मात पिता तुम मेरे शरण गहूं किस की।
तुम बिन और न कोई आश करूं जिस की॥ ओ३म् जय०
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तरयामी।
पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सब के स्वामी॥ ओ३म् जय०
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता।
मैं प्राणी अज्ञानी कृपा करो भर्ता॥ ओ३म् जय०
तुम हो एक अगोचर सब के प्राण पती।
किस विधि मिलूं दयामय तुमको मैं कुमती॥ ओ३म् जय०
दीन बन्धु दुख हरता तुम रक्षक मेरे।
करुणा हस्त बढ़ाओ शरण पड़ा तेरे॥ ओ३म् जय०
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सज्जनों की सेवा॥ ओ३म् जय०

मुद्रक—रविवर्मा सोलङ्की, आर्यभास्कर प्रेस, आगरा।

मिश्र मंडन की नारि शास्त्रार्थ करती थी।
प्रमाण बात बात में निकाल धरती थी॥
वेद ले कर के मैदां में आया करो॥ बहनों॥
केकई साथ में दशरथ के गई थी रण को॥
देखो सीता को साथ नाथ के गई वन को॥
यहां परदा नहीं था बताया करो॥ बहनों॥
इसी तरह की सुता होगई असंख्य यहां।
'शरण' इस भांति की नादान अब रहती हैं जहाँ॥
पशू वन के न जीवन बिताया करो॥ बहनों॥
जिन मुसलमानों ने पर्दा यहाँ चलाया है।
बुरा पर्दे को उन्होंने भी अब बताया है॥
बहनों व्यर्थ में मत शरमाया करो॥ बहनों॥

भजन प्रकाश ४५

नेक कमाई कर कुछ जग में जीवन सफल बनाओ री।
उत्तम अवसर प्राप्त हुआ है वृथा न इसे गंवाओ री॥
द्रुतगामी अति चंचल मन पर निज आँतक जमाओ री।
वशीभूत हो विषयों के मत दारुण दुःख उठाओ री॥
पर सुख ही में निज सुख समझो पर दुख में दुख पाओ री।
सपने में भी कभी किसी का मत तुम बुरा मनाओ री॥
प्रेम प्रीति आपस में रखिये वैर विवाद मिटाओ री।
आश्रय हीन अनाथों के प्रति दयाभाव दरसाओ री॥
करो सदा पुरुषार्थ असुर आलस को मार भगाओ री।
सत्य आचरण की नौका पर चढ़ि भव से तरजाओ री॥
भूले भटके भ्रातृगणों को सतमारग पर लाओ री।
पावन वैदिक धर्म पताका देश देश फहराओ री॥

इस मूर्खता से हो गई अत्यन्त दुर्दशा।
पैरों की जूती अब तो कहाओगी कब तलक॥
भोली समझ के तुमको हैं बहकाते पोप जी।
फन्दे में फंसके धन को लुटाओगी कब तलक॥
ईश्वर की एक पूजा छोड़ कर के देवियो।
पत्थर क़बर को शीश झुकाओगी कब तलक॥
ऋषिवर ने तुम्हें आके जगाया "सरस्वती"
उस योगीके तुम गुणको न गाओगी कबतलक॥

आरती ५०

ओ३म् जय जगदीश हरे, पिता जय जगदीश हरे।
भक्त जनन के संकट क्षण में दूर करे॥ ओ३म् जय०
जो ध्यावे फल पावे दुख बिनशे मन का।
सुख सम्पति घर आवे कष्ट मिटे तन का॥ ओ३म् जय०
मात पिता तुम मेरे शरण गहूं किस की।
तुम बिन और न कोई आश करूं जिस की॥ ओ३म् जय०
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तरयामी।
पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सब के स्वामी॥ ओ३म् जय०
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता।
मैं प्राणी अज्ञानी कृपा करो भर्ता॥ ओ३म् जय०
तुम हो एक अगोचर सब के प्राण पती।
किस विधि मिलूं दयामय तुमको मैं कुमती॥ ओ३म् जय०
दीन बन्धु दुख हरता तुम रक्षक मेरे।
करुणा हस्त बढ़ाओ शरण पड़ा तेरे॥ ओ३म् जय०
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सज्जनों की सेवा॥ ओ३म् जय०

मुद्रक—रविवर्मा सोलङ्की, आर्यभास्कर प्रेस, आगरा।

देखने योग्य नई प्रकाशक पुस्तकें ।

सचित्र एतिहासिकगीतांजली ।	मंगला मुखी अर्थात् संस्कार नवीन गीत संग्रह
इसमें भारतवर्ष के वीर पुरुषों का वृतान्त भजन गज़ल दादरा आदि अनेक गायन में दिया गया है पुस्तक सुन्दर सचित्र और देखने योग्य है । मूल्य केवल ।)	इसमें स्त्रियों के समय २ पर गाने के लिये सोवड़, जच्चा, सतमासा, चरुआ, छटी, वधावा, गारी, जौनार, घोड़ी, बन्ना, इत्यादि हरएक संस्कार पर गाने योग्य शिक्षा-प्रद गीतों का संग्रह है । मूल्य ।=)

भजन संकीर्तन या आर्य्य गायन ।

जिसमें ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना, उपदेश, संकीर्तन तथा अधिवेशनों में गाने और नवजीवन डालने वाले भजन गज़लों का नया संगृह है । मूल्य ―)॥

पढ़ने योग्य उपयोगी नये ट्रैक्ट ।

वाल प्रश्नोत्तरी)॥, कन्या प्रश्नोत्तरी)॥, भजन रामायण)॥, वैदिक सन्ध्या)॥, अमोल सांगीत ―), वैदिक रसिया)॥, शुद्धि भजन)॥, महारानी तारामती)॥, नौवहार गजलमाला)॥, रंडी खण्डन)॥, वेदों का डङ्का)॥, श्रद्धानन्द का बलिदान)॥, खूनी पिस्तौल)॥, मदीने का जलवा)॥, वेढव भजनावली)॥, गजब की गज़लें)॥, सावन बाहार)॥, आनन्द गायन)॥

मिलने का पताः—

ज्वालाप्रसाद वर्म्मा, आर्य्य पुस्तकालय, आगरा

सिर्फ टाईटिल राजपूत प्रेस, मदनमोहन दरवाजा आगरा में

नई तरज़

सात सहेली का झूला

चँदना गाने की,

और

माछुर जगाई आधीरात

लेखक

पंडित इन्द्रसन सूतैल
सवाई
ज़िला आगरा ऐतमादपुर

मुर्तज़ाई प्रेस आगरा में छपा

प्रथम बार २०००	सन् १९४० ई०	क़ीमत फ़ी जिल्द ।)

(जुमला हकूक़ महफ़ूज़)

मलहार

(१)

मेरी बहना मोपै कही नहिं जाय, बालम आयौ मेरी बाग़ में जी टेक॥ बलम सुनों नौलख बाग़ में आयौ, मेरी बहना, याकूं आउ अजमाय ॥१॥ इतनी सुनी नारो ख़ुश भई जी, मेरी, डोला रही सजाय ॥ २॥ झाड़ी लैलई हाथ में जी, मेरी, डोला बैठी मुश्किाय ॥ ३॥ लेइ देह बागनि गई जी, मेरी बहना, डोला दये हैं धर बाय ॥ ४॥ तोता कहै सुनि नल के लाड़िले, मेरे प्यारे, जल पीवै लेगी भरमाय ॥ ५॥ छोटी बहिन मारू की नारो, मेरे प्यारे, लेगी बह क़ैदि कराय ॥ ६॥ माधौ मल नारि कहावै, मेरे ढोला, नैनन में डारि खाय ॥ ७॥ नारो कहै जलु पीओ साहिबा, मेरे प्यारे, हों चों दई भुलाय ॥ ८॥ बात बन कड़ी भई दोउनि में, मेरे भैय्या, ढोला दई खाल उड़ाय॥ ९ नारौ भाजी इन्दर बाग ते जी, मेरे भैय्या मारू सों कही रिसियाय ॥ १० ॥

(२)

दूजी सखी खातिनि की लाली चालि दई जी, हेजी कोई लम्बो घूंघट मार ॥ टेक॥ नैन अचपले चितवन मारै तीर सेजी, एजी कोई बिछुआ करें झनकार ॥ १॥ शहज़ादे के ढिंग जाय यूं कहै जी, एजी कोई जल पीऔ भरतार ॥२॥ ऊपर से तोता ढोला

सूं यों कही जी, एजी कोई धोखौ है दावादार ॥ ३ ॥ खातिनि की लड़की आशिक़ तोपै है गई जी, एजी कोई दैना डाटि फटकार ॥ ४ ॥ ढोला कहै चों बावरी तू भई जी, एजी कोई खाती की लौटि पछार ॥ ५ ॥ गई खिसियाय पिछमनी इन्दर हटि गई जी, एजी कोई तेरी पति मारू हुशियार ॥ ६ ॥

(३)

तीजी सखी नाइन की चलि दई जी, एजी कोई लोटा लैलयौ हाथ ॥ टेक ॥ कौमल पैर नरम जाकी बांह हैजी, एजी कोई गह्यौ हतोड़िन हरि हाथ ॥ १ ॥ भौंहें गोल नैन खरी बनि रहे जी, एजी कोई ढोला सूं करन लागी बात ॥ २ ॥ सुअना कहै नाइनि की छोकड़ी जी, एजी कोई सूखी दीजौ डरकाय ॥ ३ ॥ पांच अशरफ़ीं गडुआ दई डारि कें जी, एजी कोई पांय लये धुलवाय ॥ ४ ॥ लैकें नेगु नाइन इन्दर चलि दई जी, एजी कोई मारू सों कहि दई जाय ॥ ५ ॥

(४)

चौथी सखी बनियां की छोरी चालि दई जी, एजी कोई घूंघर वाले बाल ॥ टेक ॥ जलकौ लोटा करमें जाने गहि लयौ जी, एजी कोई चलै मथुरिया चाल ॥ १ ॥ दहशत खान लगी दिल बीच में जी, एजी कोई मन में भई बिहाल ॥ २ ॥ तोता गा है बनियां की छोरी आइ गई जी, एजी कोई सुन्दर रूप बिशाल ॥ ३ ॥ नल को ढोटा जादब कहि रह्यो जी, एजी बनियां की

बजावै मति गाल ॥३॥ सुनत बचन बनियाँ की इन्दर भजि गई जी, एजी कोई मारू सों कही सब हाल ॥ ५ ॥

(५)

चली तमोलिनि सखी देखो पांचवीं जी, एजी कोई सुख लावे नागर पान ॥टेक॥ लोटा लै ढोला कूं चलि दई जी, एजी कोई बैसें ज्वान जवान ॥ १ ॥ हुस्न बनें बिजुरी भांति चमकै सरग में जी, एजी कोई नैना बने कमान ॥ २ ॥ नजर पड़ी तोता ढोला सें कहै जी, एजी कोई तमोलिन बिगड़ै ईमान ॥३॥ जल पीओ प्रीतम मेरे हाथ कौ जी, एजी कोई सुनि पति चतुर सुजान ॥ ४ ॥ ढोला कहै तमोली पति छोड़िऐं जी, एजी कोई इन्द्र बनावै नादान ॥ ५ ॥

(६)

छटवीं सखी सुनरा की चलि दई जी, एजी कोई गहनों बे-शुम्मार ॥ टेक॥ गालनि पै तिल की निशानी बनि रही जी, एजी कोई बेंदी दिपै लिलार ॥ १॥ लोटा लै ढोला के ढिंग गई जी, एजी कोई सुअना कही पुकार ॥ २ ॥ सुनरा की लोटा लैकें आई गई जी, एजी कोई दैना डाटि फटकार ॥३॥ मुदरी हमारी टूटी ढोला ने कही जी, एजी कोई लै जा तेरौ बाप सुनार ॥ ४ ॥ सुनत बचन इन्दर पीछें हटि गई जी, एजी कोई मारू सों कही पुकार ॥ ५ ॥

(७)

सातवीं सखी कहारिनि की चलि दई जी, एजी कोई लोटा झलकतु आय ॥ टेक ॥
लम्बी नारि उमरि की तनकसी जी, एजी कोई नैन आम की सी फांक ॥ १ ॥ शहज़ादे के जौरें धन जो गई जी, एजी कोई सुअना नें दई बताय ॥ २ ॥ हाथ बढ़ाय कहारिन ढोला सों कहै जी, एजी कोई पीयौ जल पति अघाय। ॥ ३ ॥ ढोला कहे भेज अपने बलम कों जी, एजी कोई इन्द्र रही बकुलाय ॥ ४ ॥

(८)

हंस कुमरि डोला में बैठी आइकें जी, एजी कोई पति राखै भगवान ॥ टेक ॥
द्वै सखियाँ ढोरें जी चौर कूं जी, हेजी कोई मारू बड़ी बुद्धिवान ॥ १ ॥ शहज़ादे सों सुअना ऐसें कहि रहौ जी, एजी कोई सरभनि आई सुजान ॥ २ ॥ नैनं मिले गस आयौ दौनों गिर गये जी, एजी कोई सुख में डूबे महान ॥ ४ ॥ हंस कुमरि झटपट लई उठाय कें जी, एजी कोई करहा नें करौ सूधौ ज्वान ॥ ५ ॥ बात बतकड़ी इन्दर दोउनि में भई जी, एजी कोई बाग़ बीच दरम्यान ॥ ६ ॥

चँदना गाने की

तीजन चरचा ऐरी चंदना चल रही जी, एजी कोई पड़ी है सहर में रौर ॥ सिर बदनामी चंदना क्यों लई जी, राजा ते रानी एरी चंदना यों कहै जी, एजी कोई सुनि राजा मेरी बात ॥ चिट्ठी तो भेजो चंदना के सासरे जी। धौरे पै कारी लाला जी ने लिख दयौ जी, एजी कोई दियौ है सांडिया के हात ॥ चांद उगायौ चंदना के सासरे जी ॥ चिट्ठी तो लिख कें सांडिया को दे दई जी, एजी जाकूं चलत न लागी अबार। जुरी है कचैरी चंदना के सुसर की जी, कोई जुरौ है सब दरबार। चिट्ठी तो दीनी सांडिया ने हाथ में जी। चिट्ठी तो देख लाला जी ख़ुश भये जी, कोई बांचत भये दलगीर॥ लड़के तो जायंगे अम्मां मेरी सासरे जी। बड़े घरन के लाला जी आप हो जी, कोई बड़े घरन की धीय। लोग हंसाई कुमर जी मत करौ जी ॥ पांचों तो लादे अम्मां मेरी कापड़े जी, कोई पांचों लाइदे हातियार। लड़के तो जायंगे अम्मां मेरी सासरे जी। जल्दी तो पहिने लाला जी ने कापड़े जी, कोई थमक भये असवार॥ जल्दी से पहुंचे कुमर जी सासरे जी॥ डेरा तो दीने चांदनी चौक में जी ॥ कोई जियरा रह्यौ

मुरझाइ ॥ ग़मके फफोला कुमर जी के पड़ रहे जी ॥ चौकी तो चन्दन लाला जी कूं बैठना जी । एजी कोई दूध पखासूंगी पांय ॥ आज जमाई आये पाहुने जी चामर राधे लाला जी कूं ऊजरे जी, एजी कोई हरी मगौरी धोवा दार, आज जमाई आये पाहुने जी ॥ चाभर लागें अम्मां मेरी किच किचे जी, एजी कोई वासें आवै दुरगंध पूरियाँ कराओ अम्मां मेरी रग झगी जी ॥ बीजा पुर को लाला जी कूं बीज़ना जी ॥ कोई गढ़ मथुरा को थाल, आज जमाई आये पाहु ने जी ॥ जेमत निरखे लाला जी की आंगुरी जी, एजी कोई बोलत सगुनी जीम । आज जमाई आये पाहुने जी ॥ जेमे तो जूठे माता जी रस रहे जी, एजी पौढ़न ठौर बताय, चलके तो आये अम्मां मेरी दूर से री । ऊंची अटारी लाला जी की ईंट की जी, एजी कोई दिबल बरे सारी रात ॥ नौरंगा पलका कुमर जी बिछ रहे जी । चढ़ते तो दूखे अम्मां मेरी पींडरी जी, कोई इस पर चढ़ौ न जाइ ॥ डार खटोला अंग ना में पड़ रहे जी ॥ आधी सी रात पै चन्दना उठि चली जी, एजी कोई कर सोलह सिंगार, जाय जगा यौ सभला सुनार को जी । झट पट रंग लीये लाला जी ने कापड़े जी ॥ एजी कर जोगी का भेष अलख

जगायौ समला सुनार के जी ॥ मोती तो मूंगा चंदना ले चली जी । कोई ले जोगी के भेष घर अपने कों जोगी के जाइयो जी ॥ मोती तो मूंगा चंदना बहु घबड़ानी, कोई हमको आसा और खातर आये, नौलख हार के जी । हार उतार चंदना ने दे दियौ जी ॥ कोई ले जोगी के भीख, दुआ मनाओ समला सुनार की जी ॥ घूंघटा खोलि कें राजा जी देखते जी । हमको तो आसा नौलख हार की जी ॥ हार निकार के लाला जी ने दे दयौ जी । कोई ठाड़े ते खाई पछार, मार कटारी चंदना मरि गई जी ॥

रसिया माछर

माछर जगाई आधी रात, मोकूं सोवन दै रे ॥ टेक॥ जिय माछर बड़ौ कसाई, जाने सारी रात जगाई । ऐसी मैं काटी देह, जराई है रे ॥ माछर० ॥ १ ॥ छप्पर में खाट बिछाई, तौऊ छोड़ै नहीं पिछाई । छोड़े न नेह सारी रात, भर तू देतौ पहैरे ॥ माछर० ॥ २ ॥ मैं भोर तोय समझाऊं । कूड़ौ ले आगि लगाऊं । करि देंउगी बिबमार, तेरी होगी छै रे ॥ माछर० ॥ ३ ॥ तेरी अक्ल गई है मारी, अब हू लै सोच अनारी । मन में तू करि लै ख्याल, बचि जायगौ रे ॥ माछर० ॥ ४ ॥ जो बालम सुनैगौ मेरौ, देय मिसल होय तेरौ केरौ । इन्द्र मन की तू लै तोलि अनारी जयरे ॥ माछर० ॥ ५ ॥

(इति)

ओ३म्

नारी-भजन-बिलास

जिसमें

उत्तमोत्तम भजन विविध शिक्षायुक्त तथा
सीता और रावण का सम्वाद सम्मिलित है।

जिसको

पं० न्यादरदत्त शर्म्मा ने
अपनी देशबहिनों के हितार्थ
संग्रह कर प्रकाशित
किया।

पता पं० न्यादरदत्त शर्म्मा
वासुदेव पुस्तकालय धामपुर
जि० बिजनौर

॥

Printer—R. S. Dublis, Bhaskar Press, Meerut City.

जी ॥ मोती ने

ओ३म्

नारी-भजन-विलास

भजन (१)

टेक–हे अजर अमर अविनाशी, दीनबन्धु तू है के प्रभू जी। प्रभू जी क्या तुम्हें हाल सुनावें, तू अन्तर्यामी है के प्रभू जी। प्रभू जी सब कुछ तुमने रचा, तू सब का स्वामी है के प्रभू जी। प्रभू जी विद्यादान हमें देदो, तू विद्यादाता है के प्रभू जी। प्रभू जी हम पर दया अब कीजो, तू करुणासिन्धु है के प्रभू जी। प्रभू जी तुम बिन कौन हमारा, तू सबका बन्धु है के प्रभू जी। प्रभू जी हम हैं पुत्री तुम्हारी, पिता रक्षक तू है के प्रभू जी

भजन (२)

दो०–बोली एक अमोल है, बोली जाय तो बोल।
हिया तराजू तोल कर, मुख से बाहर खोल।

टेक—वचन तू मीठा बोल वाणी का बोल बुरा है। जो वाणी में मीठापन है, उसको हर जगह अमन है। जी चाहे जहां डोल॥ वाणी०। १॥

इस वाणी से प्रीति हों गहरी, बना दे वैरी। कलेजा देती छोल॥ वाणी०॥ २॥

जायं मित्र शत्रु सब जाने, अरु जायं कोयल काग पहिचाने। जब दे मुखड़ा खोल॥ वाणी०॥ ३॥

वाणी ने हव्वा बनाया, बच्चों को लूलू सुनाया। बैठ गई सुन कर हौल॥ वाणी०॥४॥

सबकी कीमत होती है, हीरा माणिक मोती है। नहीं वाणी का मोल॥ वाणी०॥ ५॥

कहै तेजसिंह सत्य बोलो, मत असत्य मुख से खोलो, है कच्ची जिसकी तोल॥ वाणी०६॥

भजन (३)

हम अबला पुत्री तुम्हारी, तुम्हें धन्यवाद
हैं सारी। धन्य धन्य तुम्हें आर्य्य मेम्बर,
करी कृपा आपने हमपर, पुत्रीशाला हुई यहां
जारी। तुम्हें० ॥ १ ॥

यदि आप ख़बर नहिं लेते, विद्यादान कौन
हमें देते। हम अनपढ़ थीं बेचारी॥ तुम्हें०॥२॥

हमें आपने धैर्य्य बंधाया, सब तरह का हुनर
सिखाया। क्या पढ़ना और दस्तकारी॥
तुम्हें० ॥ ३ ॥

यदि यहां शाला नहिं होतीं, हम उम्र खेल
में खोतीं। यों फिरती मारी २ ॥ तुम्हें० ॥३॥

जो कन्या पढ़ने आवें, यहां आकर शिक्षा
पावें। सुनकर तारीफ़ तुम्हारी ॥ तुम्हें० ॥ ५ ॥

प्रभु करें तुम्हारी वृद्धि, सब जग में प्रसिद्धि

यही अन्तिम विनय हमारी ॥ तुम्हें० ॥ ६ ॥

एक विनय और सुन लीजो, जो है कमी पूरन कर दीजो। ऐ कौंशिल के अधिकारी ॥ तुम्हें० ॥ ७ ॥

सब सुनो राजा महाराजा, करो विद्यादान में साजा। बनो बासुदेव हितकारी ॥ तुम्हें० ८॥

भजन नं० (४)

दोहा-पहिले थीं इस देशमें, सत्यवती प्रियनार।
सत्यवती सीता सती, भोगे कष्ट अपार॥

टेक-पतिव्रतधर्म को री पालन किया नारि सीताने ॥ दीनी आज्ञा रामचन्द्र को वन की महतारी ने। उसी समय पतिसङ्ग चली नहीं छोड़ा धर्म नारीने ॥ १ ॥ देर न करी चली पति के सङ्ग सीता पतिव्रता नारी। चौदहव पतिसङ्ग नंगे पैरों फिरी विचारी ॥ २ ॥ व

में मिला दुष्ट एक रावण जिस ने उसे चुराया। वियन मार्ग के बीच नार सीता को त्रास दिखाया॥३॥ पतीव्रता थी नार स्यानी पतिव्रत धर्म न छोड़ा। मरना तक मंजूर किया नहीं धर्म से मुखड़ा मोड़ा ॥४॥ आज पति-व्रतधर्म का बहिनो रहा न तुम को ख्याल। रामचन्द्र कहै चलो हमेशा सीता की सी चाल ॥ ५ ॥

(स्त्री-शिक्षा) दादरा नम्बर (५)

बहिनो सुनना दया कर के मेरा कथन। जैसी थी सीता पतिव्रता नारी—ऐसा बनालो तुम अपना चलन ॥ बहिनो०१॥ महलों का रहना त्यागकरउसने-पतीसङ्ग जा कष्ट भोगाथा वन। बहिनो० २॥ छोड़कर वस्त्र रेशमी जोड़े-दरख्तों के पत्तों का पहिनना ओढ़न। बहिनो० ३॥ बहु तक तरह के जिन कष्ट भोगे-पर नहीं

छोड़ा पती का पूजन ॥ बहिनो० ४ ॥ माता सीता ने ये यों कष्ट भोगे-लागी पती से थी उस की लगन ॥ बहिनो० ॥ ५ ॥

तुम भी पति अपने की आज्ञा पालो-जैसी सीता बनालो तुम अपना चलन ॥ बहिनो० ॥ ६ ॥

निर्लज्ज गाने विवाहों के छोड़ो—गावो हरी के सुहाने भजन ॥ बहिनो० ॥७ ॥

भजन नम्बर (६)

शेर-आज हालत देखकर रोना नज़र आता हमें। स्त्रियों की देख हालत शर्म आती है हमें। उच्चकुल की स्त्रियां जो दर बदर मारी फिरें। जोर से चिल्लाय के ये क्या कुफ्र बकती फिरें ॥

टेक-पति को पूजलो री है वह असली देव तुम्हारा ॥ बाल अवस्था मात पिता ने पालन

किया तुम्हारा । तरुण अवस्था में पति मालिक असली देव तुम्हारा ॥ १ ॥
पाणिग्रहण कराया तुम ने कीनी थी क्या प्रतिज्ञा । उसी नियम पर चलना चहिये मानो पति को आज्ञा ॥ २ ॥
सब से बड़ा देव पति जानो उस से बड़ा न कोई । उत्तम से उत्तम फल जिस का धर्म पतिव्रत होई ॥ ३ ॥
शुद्ध ब्रह्म पतिव्रत्त को हर्गिज कभी न छोड़ो प्यारी । सत्य धर्म पर चलो हमेशा पति की आज्ञाकारी ॥ ४ ॥
असलीधर्मभजनद्वारासे दिया तुम्हें समझाई । धर्मअर्थ केकारण करते रामचन्द्र कविताई॥५॥

भजन नम्बर (७)

नारियों के धर्म बहिनो सुनोरी सुनावो। मात पिता भ्राता से बहिनो एक हद्द सुख पावो ।

बेहद सुख हो पति के कारण सेवा में उस
को तन, मन, तुम लगावो ॥ १ ॥

सासु आदि जितनी बड़ी घर में सब की
दासी कहावो। बिन आज्ञा कहीं पग नहीं
दीजे, मन मा ना सुख बहिनो तुम पावो ॥ २॥

दया राखो देवर आदिक पर और सन्तान
पढ़ावो। आमद देख खर्च को करना चादर
देखकर पग फैलावो ॥ २ ॥

पीछे सोना पाहले उठना कटु नहीं वचन
सुनावो। नित्यप्रति चीजों को पड़तालो घर
का हिसाब सारा लिखारी लिखावो ॥ ४ ॥

सोच समझकर समय २ पर सारी चीजें
मंगावो। पैसा वृथा कभी न खरचो जो तुम
घर का प्रबन्ध बनावो ॥ ५ ॥

खाली रहना बहुत बुरा है कुछ ना कुछ

किये जावो। थोड़ा थोड़ा बहुत होत है चिड़िया के घौंसले पर नज़र तो घुमाओ ॥६॥ मिट्टी पत्थर को मत पूजो क्यों तुम भरम में जाओ। पाठक एक ईश है स्वामी उसकी शरण में बहिनो तुम आओ ॥ ७ ॥

भजन नम्बर (८) अबला विलाप।

टक–लाखों कन्या करें विलाप जब से बालविवाह हुवे जारी ॥ जो थी फूल फुलन की वारी, करके बालविवाह की त्यारी। उन बच्चों की गर्दन मारी, जो थे होनहार ब्रह्मचारी। लाखों०॥१॥ रचके छोटी उमर में शादी, बाला कन्या व्याह बिठादी। अब ये किस पर जायं फिरादी, छोटी अबला दीन विचारी। लाखों०॥२॥ सुनियो पिता और सब माई, आखिर हम हैं तुम्हारी जाई। फिर भी तम्हें दया नहीं आई, कैसी छाती वज्र तुम्हारी

लाखों०॥३॥ तुम को कन्याओं की आह, दिन२ करती जाय तबाह। फिरभी तजैं न बालविवाह बुद्धि गई है सबों की मारी। लाखों० ॥४॥ झूंठा किया लाड़ और प्यार, अपनी सन्तति लई बिगार। सारे छूट गये संस्कार, विद्या विमुख हुवे नर नारी। लाखों० ॥ ५ ॥ स्त्रीजाति के अधिकार, तुमने छीने बेशुम्मार। उनको बना दिया लाचार, आयु कटे दुखों से सारी। लाखों० ॥६॥ इसका हुवा येही परिणाम, घर में नित्य सुबह और शाम। होवे देवाऽसुर संग्राम, कैसी दुर्गति हुई है तुम्हारी। लाखों॥७॥ अब भी अगर भलाई चाहो, इन को ब्रह्मचर्य्य सधवावो। सच्ची विद्या वेद पढ़ावो, विदुषी बनें देश की नारी। लाखो० ॥८॥ ऐसे ही पुरुष पूर्ण विद्वान्, होवें इन्द्रियजीत बलवान्। सीखें वेद धर्म का ज्ञान, हों धर्मज्ञ

देशहितकारी। लाखों०॥९॥युवती कन्या पुरुष युवा हो,और गुण कर्म स्वभाव मिला हो। तब ही पाणिग्रहण हुवा हो, ये है विवाह वेद अनुसारी। लाखों०॥१०॥ विनती बासुदेव की भाई, सुनलो वेद धर्म अनुयायी। छोड़ो बालविवाह दुखदाई, जिसने करी देश की ख्वारी। लाखों कन्या करें विलाप० ॥ ११ ॥

भजन नम्बर (९)

सुनो बहनो पड़ी किसको है, जो हम को सुधारेगा। जो खुद बिगड़ा है, वह फिर दूसरों को क्या सुधारेगा ॥ तजो अब आस दुनियां की, निबाहो धर्म अब अपना। सुधारा जिसने औरों को, वही हमको सुधारेगा ॥ न था वह दिन कभी हम पर,न रहवेगा कभी हर्गिज़। न जाने काल किस को कब, बिगाड़ेगा सुधारेगा ॥ कमी पूरी करो

अपनी, तजो संसार के झंझट। हमारा कर्म हम को आप, ही एक दिन सुधारेगा ॥ न पग पीछे धरो बहनो, डरो मत विघ्न बाधा से। जगत् को हम सुधारेंगी, जगत् हमको सुधारेगा ॥ पढ़ो गुण सीख लो सारी, कुचालें छोड़दो अपनी। सुधरती देख वह इस तौर पर हमको सुधारेगा ॥ जरा सब मन लगा कर ध्यान, दो माधो की बातों पर। समय के चूकने पर फिर, न कोई भी सुधारेगा ॥

भजन नम्बर (१०)

सीता जी की प्रार्थना रामचन्द्र से वन जाते समय

टेक—चाहे लाख कहो नहीं मानू पति, मैं तो वन को चलूंगी सङ्ग पिया। घर बार से मोहे कुछ काम नहीं यही दिल में मैं नाथ विचार लिया ॥ १ ॥ जहां नाथ तुम्हारा दर्शन है, वहीं सुख का समूह निरन्तर है।

दासी का तो ध्यान तुम्हीं से लगा, चित चरणन नाथ लगाय लिया ॥२॥ चाहे० ॥ पति प्रेम में मगन रह तिरिया, येही धर्म सनातन है स्वामी । तनमन धन से सेवा करके, सुख मानूंगी भरतार जिया ॥ ३ ॥ चाहे० ॥ सुख धन ऐश आराम हैं सब, तुम विन तुच्छ समान हैं ये । सुख दुःख में पति की सहाय करे, यों वन चलना अख्त्यार किया ॥ ४ ॥ चा०॥ जो कठिन बनों के रस्ते हैं, मुझे फूलों से कोमल स्वामी । श्री जानकीनाथ कृपा करियो वर मांग रही बहु बार सिया ॥ चाहे लाख कहो नहीं मानू पति मैं तो बन को चलूंगी सङ्ग पिया ॥

भजन (११)

सीता को चुराते समय रावण को जटायु का समझाना ॥

शेर

सिया हरने का यह असर देख लेना।
कि तन से जुदा अपना सर देख लेना॥
सती को चुराते हो वन में अकेली।
नफा टोटा अपना मगर देख लेना॥ सिया०
इसे हाथ लाना है बस ज़हर क़ातिल।
बुरा है इन्हें बद नज़र देख लेना॥ सिया०
अरे मानले मेरा कहना तू रावण।
मगर जा नरक अपना घर देख लेना॥ सिया०
बदी बीज बोवेगा जो कोई भाई।
मुसीबत के उन के करम देख लेना॥ सिया०

भजन नम्बर (१२)

मंदोदरी का रावण को समझाना

तर्ज—रघुवर कौशिल्याके लाल मुनिकी यज्ञ रचानेवाले।

प्रियतम सुनो सुमति हियधार, सती सीता के चुराने वाले। सीता के चुराने वाले, कुलको

दाग़ लगाने वाले ॥ प्रिय० टेक ॥ रानी थीं दश आठ हज़ार, लाया क्यों हर कर परनार। तज कर धर्म करम सुख सार। नीति मरयाद मिटाने वाले ॥ प्रिय० ॥१॥ जो तुझे थी सीता से प्रीत। लाया क्यों नहीं स्वयम्बर जीत। यह थी क्षत्रीपन की रीत। क्षत्री नाम लजाने वाले ॥ प्रिय०२॥ जो सीता लीनी थी ठान, लाया क्यों नहीं सन्मुख आन। तुम थे जोधा बलवान। गिर कैलाश उठाने वाले ॥ प्रिय० ॥ ३ ॥ जाकर दण्डकवन के बीच, सूनी लाये सती को खींच। कीना काम नीच से नीच, बने नरकों में जाने वाले ॥ प्रिय० ॥ ४ ॥ होना था सो हो गया ख़ैर, उलटी देदो सीता फेर। अच्छा नहीं राम से बैर, ऐसे कहते कहने वाले ॥ प्रिय०॥ ५

भजन (१३)

तरज—कोई ऐसी सखी चातुर ना मिली मोहे पी के द्वारे०

अरे रावण तू धमकी दिखाता किसे मुझे मरने का ख़ौफ़ो ख़तर ही नहीं। मुझे मारेगा क्या अपनी ख़ैर मना तुझे होनी की अपनी ख़बर ही नहीं ॥ टेक ॥ क्या तू सोने की लंका का मान करे मेरे आगे यह मिट्टी का घर ही नहीं ॥ मेरे मन का सुमेरु हिलेगा नहीं मेरे मन में किसी का भी डर ही नहीं ॥ अरे० ॥ १ ॥ तूने सहस अठारह जो रानी बरीं हाय उनपे भी तुझको सबर ही नहीं। पर तिरया पे तूने जो ध्यान दिया क्या निगोड़े नरक का ख़तर ही नहीं ॥ अरे० ॥ २ ॥ आवें इन्द्र, नरेन्द्र जो मिल के सभी क्या मजाल जो, शील को मेरे हते ॥ तेरी हस्ती है क्या सिवा राम पिया मेरी नज़रों में कोई

बसर ही नहीं ॥ अरे० ३ ॥ क्यों ना जीत स्वयंवर तू लाया मुझे मेरी चाह थी मन में जो तेरे बसी। था तू कौन शहर मुझे दे तो बता क्या स्वयंवर की पहुंची खबर ही नहीं ॥ अरे० ४ ॥ हुआ सो तो हुआ अब मान कहा मुझ राम पे जल्दी से दे तू पठा। कह सीता वगर न तू देखेगा क्या कोई पल में तेरा अब सर ही नहीं ॥ अरे० ५ ॥

भजन नं० (१४)

सीता सती का रावण को समझाना।

हा हा रे पापी रावण हाथ न लगा ॥
हाथ न लगा मेरा मान ले कहा। तेरी होनी है पुकारे मेरे हाथ न लगा ॥ टेक
हा हा रे रानी तेरे आठ दश हजार ॥
आठ दश हजार लाया काहे पर नार ॥
सुन रे हत्यारे महापाप तैं किया। हा

हा०॥१॥ हा हा तू दल बल का मान ना करे। मान न कर मत शील को हरे ॥ अपना वंश क्यों बिगाड़े मन में सोच तो जरा ॥ हा हा० ॥२॥ हा हा जो था तू ऐसा जोधा बलवान। जोधा बलवान लाया क्यों ना स्वयम्बर मान। जिस में बैठे थे सारे दरबार था लगा ॥ हा हा० ३ ॥ हा हा रे वेगी मोहे राम पे पठा। राम पै पठा दे कलेश को मिटा। कहे सीता पुकार इसी बात में भला ॥ हा हा० ॥ ४ ॥

भजन नं० (१५)

है नहीं कलजुग यह है करजुग समझ कर देख लो—जैसा जो करता है फल पाता है करके देख लो ॥१॥ जो दया करते हैं औरों पर वही पाते हैं चैन। दुःखसागर में पड़े पापी पाप कर

के देखलो ॥२॥ है० ॥ अपने जीने के लिये जो और का काटें गला। सुख नहीं पाते हैं वह भी जा सता के देखलो ॥३॥ है०॥ मित्र हिंसा का फल अच्छा कभी होता नहीं। आगई भारत पे आफत आंख भर के देखलो ॥४॥ है०

भजन नं० (१६)

फजूलखर्ची पर

फजूलखर्ची को तजो प्यारे। बिगड़ गये लाखों धनवारे। फजूल ०। टेक ॥ व्याह किया मनड़के हो बैठे कंगाल, रण्डी भड़वे कर दिये दे जर मालमाल। अजब हो मूरख मतवारे। फजूल०१ नामवरी के वास्ते भूर फैंक बहु कीन, पीछे हाट दूकान की हुई एक दो तीन। पड़े औंधे सब नक्कारे। फजूलखर्ची०२ ॥ काज रचाया नाम को करके जोर अनेक। काम बिगाड़ा

आपना मानी कही न एक। फिरो अबतो दर२ मारे। फ़जूल० ३॥ लड़का जब पैदा हुआ खूब लुटाया माल। चाहे जच्चा और पुत्र भी भूखे फिरें बेहाल। मगर हो नाम एक बारे। फ़जूल४ विद्या पढ़ने के लिये कहें कहां से आय। बद रस्मों में बंद कर आंखें लाख लुटाय। बनादिये हैं मूरख सारे। फ़जूल०५। मूरख बन चोरी करें करें मांस मदपान। जुवा गणिका संग में करें धर्म की हानि॥ पड़े दुख सागर मझधारे॥ फ़जू०६। फ़जूल खर्च के कारणे बढ़ा पाप अति घोर। काल प्लेग अब हिन्द में छाय गया चहुं ओर। हुवा भारत गारत प्यारे। फ़जूल०७। अब तो आंखें खोलिये भारतसुत प्रवीन। नहीं दो दिन में देखना हां कौड़ी के तीन। कहे न्यामत हित की प्यारे। फ़जूलखर्ची० ॥ ८ ॥

भजन नं० (१७)

॥ अजारोदन ॥

बकरे की मैया रोवे और रुदन मचावे। अपने पुत्रों को तुम चाहते, मेरे पुत्रों की भेट चढ़ाते। बकर भैंसों को कटवाते। तड़फ २ जिया जावे। बकरे की० ।१। जैसा पुत्र अपना तुम्हें प्यारा, क्या बकरी को नहीं विचारा। बिला खता के उसको मारा भोगोगे थारे आगे२ आवे। बकरे०।२। अपने सुत का चाहते जीना मेरे पुत्र को भेट में दीना। दया धर्म सब ही तज दीना। अपने की जान बचावे। बकरे०३ ईश्वर हैं वो न्याय करैय्या, देवी देवता किस के भैया। जिस दिन आवे काल बलैया। मूंड पकड़ ले जावे ॥ बकरे० ४ ॥ देवी है वो सब की माता, क्यों तू नाहक दोष लगाता। क्यों बकरों की भेट चढ़ाता। नत्थूराम दुःख पावे,

बकरे की मैया रोवे और रुदन मचावे ॥५॥

भजन चेतावनी नं० (१८)

सांची मान सहेली परसों, पीतम लेने आवेगो री (टक)–मात पिता भाई भौजाई, सब सों राखि सनेह सगाई। दो दिन हिल मिल काट वहां से फिर को तोहि पठावेगो री, सांचो० ॥ अबको छेता नाहि टरेगो, जाना पिया के सङ्ग परैगो। हम सबको तेरे बिछुरन का। दारुणशोक सतावेगो री। सांची० २ ॥ चलने की तैयारी करले, तोशा बांध गैल को धरले। हालैं हाल विदा को विरियां का पक्वान बनावेगो री॥ सांची०॥३॥ पुर बाहर लों पीहर वारे, रोवते साथ चलेंगे सारे॥ शङ्कर आगे आगे तेरो। डोला मचकत जावेगो री॥ सांची मान सहेली० ॥ ४ ॥

ऋषि उपकार।

दादरा नम्बर (१८)

टेक-हमें आकर जगाया दयानन्द ने।
गुल था चिराग़ इल्मो अमल, कल की बात है। ये भी ख़बर न थी हमें, दिन है कि रात है। ख्वाबे गफ़लत मिटाया दयानन्द ने
था ज़हर पर यक़ीन कि, आबे हयात है समझे थे राहे कुफ्र को, राहे निजात है॥ सीधा रास्ता बताया दयानन्द ने। हमें०
पानी को पानी आग को, बस आग कह दिया। खोटे खरे को जांचकर. बेलाग कह दिया॥ हक़ वो बातिल समझाया दयानन्दने। हमें० ३
बेजान सब खुदा किये गर्दन मरोड़ कर। वो भी तो अब रहे नहीं तेतीस करोड़ के। सारा पाखंड हटाया दयानन्दने। हमें० ४

नामो निशान शिर्क का, बिलकुल मिटा दिया। तौहीद का जहान में डंका बजा दिया॥ वैदिकमत को फैलाया दयानन्द ने। ५।

आये हंसी जो कोई भी क़ानून यह पढ़े। कोई करे गुनाह तो सूली कोई चढ़े॥झूठा निश्चय मिटाया दयानन्द ने। हमें० ६

होंगे शफ़ीह हशर पै, पैग़म्बरो इमाम। ये एतकाद भी है सरासर ख्याले खाम॥ देखो सबको समझाया दयानन्द ने। हमें० ७

ज़ो आया उनके पास मुसलमानो ईसाई। उपदेश से हो फ़ैजयाब चोटी रखाई। गो-रक्षक बनाया दयानन्द ने—हमें० ८

बेख़ोफ़ो बेख़तर है दयानन्द का मिशन। बेख़ार रह गुज़र है दयानन्द का मिशन॥ राहते गुलशन खिलाया दयानन्द ने हमें० ९

तकमील इस मिशन की करो यार पिलपड़ो।
ऐ छज्जूलाल कर नमस्ते बाहम मिलपड़ो॥
करो कर जो दिखाया दयानन्द ने। हमें
आकर जगाया० १० ॥

दादरा नम्बर (२०)

टेक—लहराती है खेती दयानन्द की।
वैदिकधर्म्म का बीज नमूदार होगया।
गुरुकुल सा बियावान भी गुलज़ार होगया।
लहराती है० ॥ १ ॥
करते प्रचार आर्य्य करके गदागिरी।
करते हैं अहले क़ौम की ये मुफ्त चाकरी।
लहराती है० ॥ २ ॥
छुप २ के गुल चुराते थे ईसाई मुसल्मां।
अब आर्य्यसमाज बनी उस की पासबां।
लहराती है० ॥ ३ ॥
जो चीख़ २ करते थे वेदों की बुराई।

देखो उन्हों ने दाढ़ी मुंडा चोटी रखाई।
लहराती है० ॥ ४ ॥

चन्द्र जो गुरुकुल से ब्रह्मचारी आयेंगे।
मक्के में जाके आर्य्य-मंदिर बनायेंगे।
लहराती है० ॥ ५ ॥

दादरा नं० २१

टेक--दयानन्द की आज्ञा बजाये जाओ जी।
देखो विचारो बैठो न आंखों को मीच के।
अपने लहू से जिसको गया स्वामी सींचके।
इसमें थोड़ा सा जल तो बहाये जाओ जी १
गुरुदत्त इस की रक्षा में जान दे गये।
कुर्बान होके लेखराम प्राण दे गये ॥
तुम भी अपने प्रण निभाये जाओ जी।
दया० ॥
प्राणों को तुलसीराम जी निसार करगये ॥
खूं दे कर इस शजर को समर दार कर गये

कुछ तुम भी तो करके दिखाये जाओ जी।
दया० ॥
फल मीठे लग रहे शुद्धि की शाख़ पर।
कई भाई बहन खाके जिसे होगये अमर ॥
सारी दुनियां को वो खिलाये जाओ जी।
दया० ॥
हिम्मत से आर्य्यों की घड़ी ऐसी आयेगी।
ये शाख़ फूट २ के बाहर को जायेगी
ज़रा हिम्मत को अपनी बढ़ाये जाओजी ॥
दया० ॥
चन्द्र कहे कि तोहफा इसका सबको खिलाओ
गौ क़न्या दीन अनाथ की आहों से बचाओ
इनके दुखड़े के कूड़ा हटाये जाओ जी।
दया० ॥

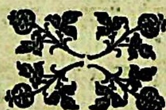
भजन (ग़ज़ल) नं० (२२)

तेरा करम दया के यहां लब पे आम होगा।

सुख संपत्ति में भारत यह स्वर्गधाम होगा॥
बृन्दावन और तपोबन हैं धूर्तों के मसकन।
ऋषियों का इन बनोंमें फिर कब क़याम होगा॥
बस में नफ़्स के होकर करते हो जीव हिंसा
कब सात्वीक भोजन इन का तआम होगा॥
सृष्टीमें तेरी इन्सां पशुओं को मारते हैं
इनके सितम का खंजर कब दरमियान होगा॥
चौरासी लाख योनी इन योनियों का चक्कर॥
इस जीव ना तवां का कब इसमें काम होगा॥
थी ये तो देवभूमी असुरों की अब है लंका।
कब देवतों का बासा फिर इसमें आम होगा॥
श्रीरामचन्द्र सा बेटा लक्ष्मण भरत सा भाई।
कब हर मनुष्य यहां का ऐसा तमाम होगा॥
ठगी से धन कमाना और रिश्वतों का लेना
गुरबां का हक़ दबाना कब यहां हराम होगा॥

———

भजनसूची ।



एक दृष्टि इधर भी

प्यारे सज्जनपुरुषो, बहिनो और माताओ आर्य्यभजनानुरागियो और ज्ञानविद्या के प्रेमियो ! आज कल जो कुछ प्रचार भजनों का हो रहा है वह सब पर प्रकाशित है, इस लिये जो गानविद्या के प्रेमी हैं वे सब प्रकार के भजनों की किताबें तथा सब कवियों की बनाई नये २ प्रकार की भजनपुस्तक हमारे यहां से मिलती हैं इन के अलावा अन्य पुस्तकें स्त्रीशिक्षा की तथा आर्य्यधर्मसम्बन्धी सब प्रकार की उर्दू नागरी की यहां से नक़द मूल्य पर मिलती हैं महर्षि स्वामी दयानन्द कृत पुस्तकें सत्यार्थप्रकाश मूल्य १) ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका १।) संस्कारविधि मू० ॥।) इत्यादिक

मुंशी चिम्मनलाल कृत ।

गृहस्थ-आश्रम मू० १।) स्वामी जी का जीवनचरित्र ॥) नारीधर्मविचार ॥)

पंडित बासुदेवकृत भजन पुस्तकें ।

बासुदेवनूतनभजनप्रकाश मू० ≡)

बासुदेवभजनमाला ।=)

आर्य्यभजनभंडार मू० ॥।)

संगीतरत्नप्रकाश पांचों भाग ॥।-)

तेजसिंहशतक ।) बसंतमाला -)

बलदेवसिंह चौधरी घीसाराम तथा नवलसिंह कृत भजनों की पुस्तकें भी मौजूद हैं ।

मिलने का पता:-

पं न्यादरदत्त शर्मा

बासुदेव पुस्तकालय धामपुर

जिला बिजनौर

सूचना

विदित हो कि ये भजन बहुत उपयोगी, जान आप को भेंट किये जाते है आशा है कि सब भाई और बहन इसे सादर स्वीकार करेंगे।

इति

आप का कृपापात्र

पं० प्यारेदत्त शर्म्मा

वासुदेव पुस्तकालय

धामपुर जि० बिजनौर

...रामरतन इण्टर कालेज रोड, कचौसी बाजा...

कृपया इसी कार्ड को व्यक्तिगत बुलावे की मान्यता प्रदान करें।

अनुकम्पा से हमारे यहाँ



चिरंजीव-सौरभ कुमार

सुपौत्र- : स्व० श्री मुंशीलाल यादव एवं श्रीमती चन्द्रावती

सुपुत्र : श्री सुरेश बाबू यादव एवं श्रीमती श्रीदेवी

निवासी : रामरतन इण्टर कालेज रोड

कंचौसी बाजार



शुभ तिलकोत्सव संस्कार

बेला पर वेद मंत्रों की ध्वनि एवं शहनाइयों से गुंजित सुमधुर क्षणों में पधार कर अपने स्नेह आशीषों की निर्मल वर्षा कर हमें अनुग्रहीत करें।

आपका स्वागत है SMS की तरह,

मेरी चाचा/मामा के तिलक में आइये Ringtone की तरह

आशीर्वाद दीजिये Balance की तरह,

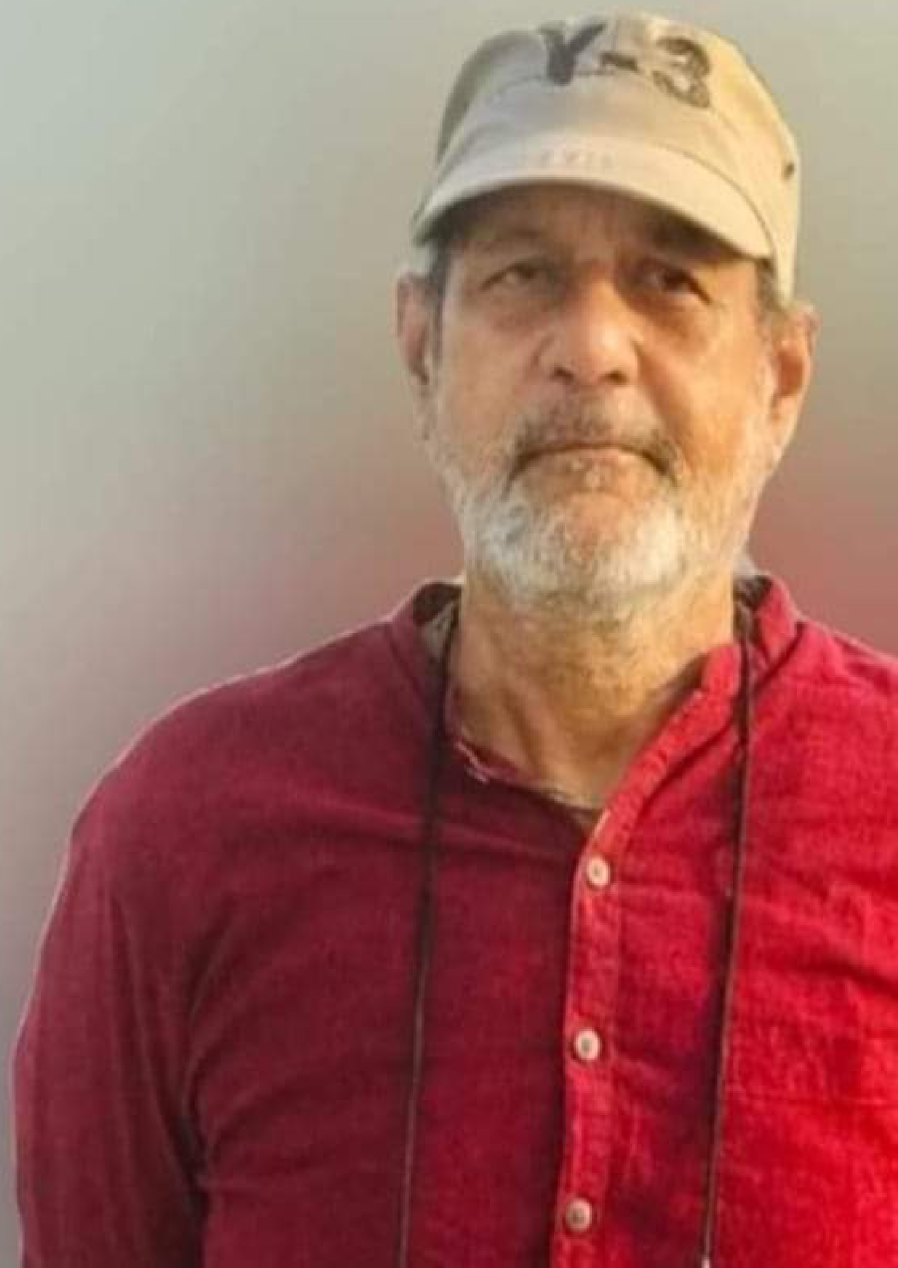
बिजी रहने का बहाना न करना Network की तरह।

-वैष्णवी, महक, हर्ष, कृष्णा, अवनी

स्वागकर्ता

आप और हम




Y-3

This PDF you are browsing is in a series of several scanned documents from the Chambal Archives Collection in Etawah, UP

The Archive was collected over a lifetime through the efforts of Shri Krishna Porwal ji (b. 27 July 1951) s/o Shri Jamuna Prasad, Hindi Poet. Archivist and Knowledge Aficianado

The Archives contains around 80,000 books including old newspapers and pre-Independence Journals predominantly in Hindi and Urdu.

Several Books are from the 17th Century. Atleast two manuscripts are also in the Archives - 1786 Copy of Rama Charit Manas and another Bengali Manuscript.Also included are antique painitings, antique maps, coins, and stamps from all over the World.

Chambal Archives also has old cameras, typewriters, TVs, VCR/VCPs, Video Cassettes, Lanterns and several other Cultural and Technological Paraphernelia

Collectors and Art/Literature Lovers can